तत्त्वार्थसूत्रम्

Tattvārthasūtram

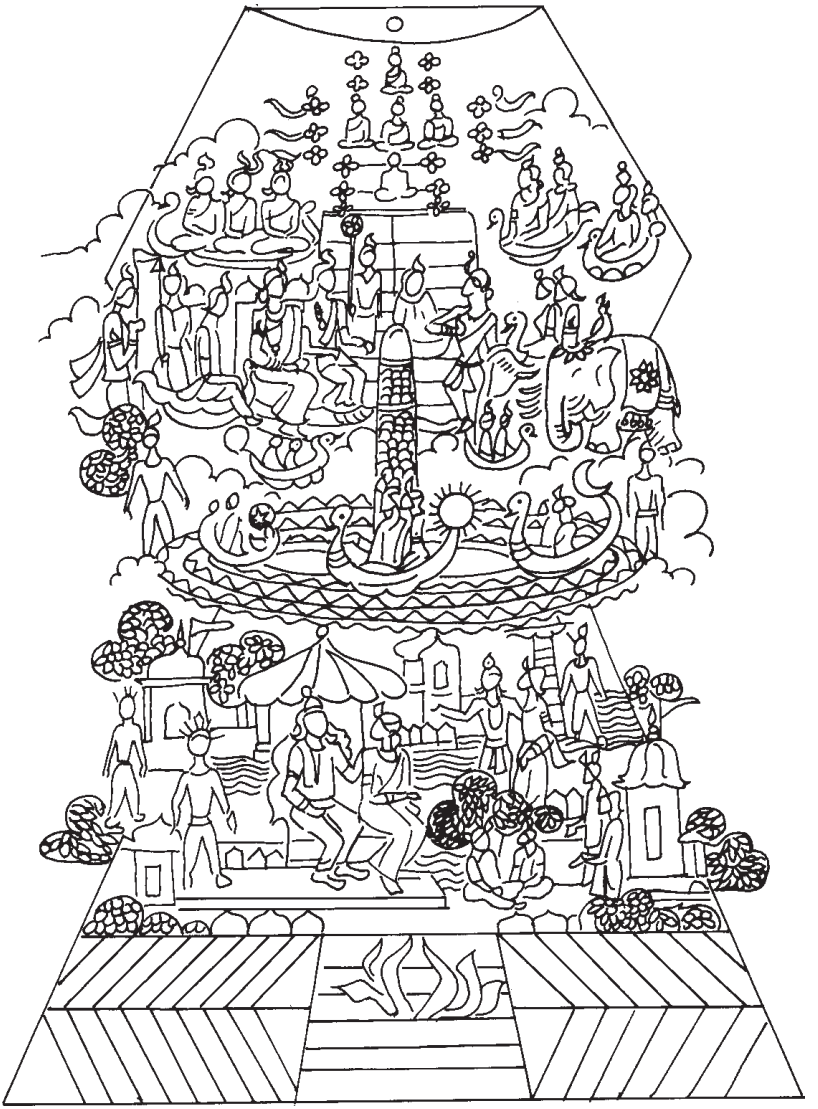

चतुर्थोऽध्यायः

Fourth Chapter

तत्त्वार्थसूत्र
चतुर्थ अध्याय

देवों के चार निकायों का अङ्कन इसमें किया गया है। चित्र के ऊपरी ऊर्ध्वलोक भाग में सिद्धशिला के नीचे केन्द्र में सर्वार्थसिद्धि व बाकी चार अनुत्तरों को दिखाया है। अनुत्तरों के नीचे नौ अनुदिश व अनुदिशों के नीचे नौ ग्रैवेयक हैं। ग्रैवेयकों के नीचे 16 स्वर्ग दर्शाये हैं। इसमें बायीं तरफ लौकान्तिक देवों का विमान दर्शाया है। उसके नीचे सौधर्म इन्द्र की सभा दिखायी है, जिसमें मंत्री, नर्तकी, द्वारपाल आदि **वैमानिक देव** अङ्कित हैं। इन्द्र सभा के नीचे मध्यलोक में सुमेरू पर्वत की परिक्रमा करते सूर्य, चन्द्रादि **ज्योतिष देव** का अङ्कन है। उनके नीचे द्वीप व समुद्र दिखाये गये हैं। वहीं दायीं-बायीं ओर **व्यंतर देव** खड़े दिखाये हैं।

मध्यलोक के नीचे अधोलोक में **भवनवासी देव** व उनके भवन दिखाये गये हैं। साथ ही व्यंतर देव का भी अङ्कन है। अधोलोक की पहली पृथ्वी के अतिरिक्त शेष 6 पृथ्वियों को चित्र के निचले भाग के मध्यगत 6 लाइनों में दिखाया है। चित्र का बाहरी आकार लोकाकार है।

तत्त्वार्थसूत्रम्

Tattvārthasūtram

चतुर्थोऽध्यायः

Fourth Chapter

देवों के भेद

Groups of Devas

देवाश्चतुर्णिकायाः ।।१।।

(देवाः चतुः-निकायाः।)

Devāścaturṇikāyāḥ. (1)

शब्दार्थ : **देवाः –** देव; **चतुः –** चार; **निकायाः –** निकाय या समूह (वाले हैं)।

Meaning of Words : **Devāḥ -** celestial beings; **Catuḥ -** four; **Nikāyāḥ** - (are) groups or Classes.

सूत्रार्थ : देवों के चार निकाय या समूह हैं।

English Rendering : There are four groups or classes of celestial beings.

टीका : अभ्यन्तर कारण देवगति नामकर्म का उदय होने पर जो सांसारिक जीव नाना प्रकार की बाह्य विभूति के द्वारा द्वीप-समुद्र आदि स्थानों में इच्छानुसार क्रीड़ा करते हैं, वे देव हैं। देवगति में होने वाले परिणामों से देव अन्य संसारी प्राणियों की अपेक्षा सुखी रहते हैं। वे अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व आदि आठ गुणों/ऋद्धियों से युक्त होते हैं।

देवों का शरीर वैक्रियिक होता है जो धातु-मल दोषों से रहित और अविच्छिन्न रूप-लावण्य से युक्त सदा यौवन अवस्थावत् रहा करता है। देव भी प्रत्येक शरीर वाले होते हैं, क्योंकि इनके शरीर में निगोदिया जीव नहीं होते।

देवों के चार समूह हैं - भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक।

जिनका स्वभाव भवनों में निवास करना है, वे भवनवासी कहलाते हैं। जिनका नाना स्थानों में निवास होता है, वे व्यन्तर कहलाते हैं। जो देव ज्योतिर्मय हैं, वे ज्योतिष्क कहलाते हैं। जो देव विमानों में निवास करते हैं, वे वैमानिक कहलाते हैं।

पहले से कोई चिह्न न होते हुए देवों का जन्म यथायोग्य स्थान में सहसा होता है। वे अत्यन्त रमणीय उपपाद शय्या पर जन्म लेते हैं तथा जन्म लेते ही एक मुहूर्त्त के भीतर ही उनका सम्पूर्ण शरीर परिपूर्ण हो जाता है एवं उसके स्नान, वस्त्राभूषण आदि जन्म से सम्बन्धित सब संस्कार भी हो जाते हैं।

Comments : Worldy beings who have rise of 'Devagati Nāma Karma' as an internal cause are the celested beings endowed with several kinds of external magnificence, they roam freely for amusement at their sweet-will in different parts of terrestrial continents, oceans etc., As a result of their life-course, they derive greater pleasures than any other worldy being. They are endowed with eight extra-ordinary powers or virtues like Aṇimā (transformation of body into the shape of a particle), Mahimā (transformation into several grandeurs), Laghimā (power of making body lighter than air), Garimā (making miraculously heavy body), Prāpti (power of extending finger or any other part of the body to touch distant objects), Prākāmya (power of special walking on the surface of earth or water), Īśitva (miraculous power of supremacy) and Vaśitva (power of winning over all living beings).

The bodies of celestial beings have power of transformation, are devoid of body filth-elements and they are always in their youth, possess continuous appearance of extreme beauty and grace. Their individual bodies are free from Nigoda Jīvas (micro-organism).

Celestial beings are divided in to four groups or classes - Residential (Bhavanavāsī), Peripatetic (Vyantara), Stellar (Jyotiṣka) and Heavenly (Vaimānika).

Those whose instinct is to reside in residences are known as 'Residential', Those whose residences are scattered in different places are peripatetic. Those who are endowed with luster are known as stellars. Those who reside in heavens (Vimānas in upper world) are known as heavenly.

The birth of celestial beings is instantenous i.e. all of a sudden at an appropriate place without any prior indications. They take birth on extremely attractive special beds. They complete formation of their bodies, bathing, decoration with celestial clothings, ornamentation etc., all birth related rituals in a period of one Muhūrta.

भवनत्रिक देवों की लेश्याएँ
Colouration of Bhavanatrika Devas

आदितस्त्रिषु पीतान्तलेश्याः ।।२।।

(आदितः त्रिषु पीतान्त-लेश्याः।)

Āditastriṣu Pītāntaleśyāḥ. (2)

शब्दार्थ : **आदितः** – आदि के; **त्रिषु** – तीन (निकायों) में; **पीतान्त** – पीत है अन्त में जिसके; **लेश्याः** – लेश्यायें (हैं)।

Meaning of Words : **Āditaḥ -** from the first; **Triṣu** - in the three groups; **Pītānta** - in the last is yellow - colouration; **Leśyāḥ** - (thought) colouration.

सूत्रार्थ : देवों के आदि के तीन निकायों में पीतान्त (कृष्ण, नील, कापोत एवं पीत) लेश्याएँ होती हैं।

English Rendering : In the first three groups (of celestial beings), the thought - colouration upto yellow prevails i.e. black, blue, grey and yellow.

टीका : देवों के आदि यानी प्रथम तीन निकाय हैं – भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिष्क। इन तीनों निकायों के देवों की चार लेश्याएँ – कृष्ण, नील, कापोत और पीत होती हैं। इन तीन निकायों के देवों को 'भवनत्रिक' कहा गया है। 'सर्वार्थसिद्धि' ग्रन्थ की टीकागत हिन्दी विशेषार्थ में स्पष्ट किया गया है कि इन भवनत्रिक देवों के पर्याप्त अवस्था में तो केवल पीत लेश्या ही होती है, परन्तु अपर्याप्त अवस्था में तीन लेश्याएँ भी हो सकती हैं। यह नियम है कि कृष्ण, नील और कापोत लेश्यायों के मध्यम अंश से मरे हुए कर्मभूमियाँ मिथ्यादृष्टि मनुष्य और तिर्यञ्च और पीत लेश्या के मध्यम अंश से मरे हुए भोगभूमियाँ मिथ्यादृष्टि मनुष्य और तिर्यञ्च भवनत्रिक में उत्पन्न होते हैं। चूँकि ऐसे कर्मभूमियाँ मनुष्यों और तिर्यञ्चों के मरते समय प्रारम्भ की तीन अशुभ लेश्याएँ होती हैं, अतः इनके मरकर भवनत्रिकों में उत्पन्न होने पर अपर्याप्त अवस्था में ये अशुभ लेश्याएँ पाई जाती हैं। इसलिए यहाँ भवनत्रिक देवों की प्रारम्भ की चार लेश्यायों का कथन अपर्याप्त अवस्था की अपेक्षा है। लेकिन सूत्र से ऐसा ध्वनित नहीं होता कि यह कथन केवल अपर्याप्त अवस्था की दृष्टि से

किया गया है। क्योंकि अपर्याप्त अवस्था तो मात्र एक अन्तर्मुहूर्त तक रहती है। सूत्र से तो स्पष्ट है कि भवनत्रिक देवों – भवनवासी, व्यन्तर और ज्योतिष्क में कृष्ण, नील, कापोत और पीत – ये चार लेश्याएँ हो सकती हैं।

Comments : The first three orders of celestial beings are residential, peripatetic and stellar. Among these three orders of celestial beings, four types of thought - colourations - black, blue, grey and yellow prevail. These three orders of celestial beings are termed together as 'Bhavanatrikas'. In Hindī commentary of the 'Sarvārthasiddhi' scripture; it is mentioned that in the 'Paryāpta' state i.e. on completion of their physical characteristics, only yellow thought - colouration prevails amongst these classes of celestial beings but in the Aparyāpta state i.e. before completion of the power of their physical characteristics, they may have the three inauspicious thought colouration also. The rule is that wrong believers - human beings & Tiryañcas of action-land with medium portion of black, indigo or grey thought colouration and the wrong believers - human beings & Tiryañcas of pleasure-land dying with medium portion of yellow - thought colouration, take their next birth in Bhavanatrikas. Since at the time of death, the human beings & Tiryañcas of action-land possess first three inauspicious thought - colourations, and continue in their Aparyāpta state are born in Bhavanatrikas. As such the mention of the first four inauspicious thought colourations in this Sūtra is in reference to the Aparyāpta state of Bhavanatrikas. But it does not colloberate from the close reading of this Sūtra as the Aparyāpta state lasts only for an Antarmuhūrta. It is clear from the reading of Sūtra that the Bhavanatrikas - residential, parepatetic and stellar celestial beings may have any of the four thought - colourations i.e. black, blue, gray and yellow.

देवों के भेद
Classes of Devas

दशाष्टपञ्चद्वादशविकल्पाः कल्पोपपन्नपर्यन्ताः ।।३।।

(दश-अष्ट-पञ्च-द्वादश-विकल्पाः कल्पोपपन्न-पर्यन्ताः।)

Daśāṣṭapañcadvādaśavikalpāḥ Kalpopapannaparyantāḥ. (3)

शब्दार्थ : **दशाष्टपञ्चद्वादशविकल्पाः** – दश, आठ, पाँच एवं बारह प्रकार; **कल्पोपपन्नपर्यन्ताः** – कल्प तक उत्पन्न होने वाले (देव)।

Meaning of Words : **Daśāṣṭapañcadvādaśavikalpāḥ** - ten, eight, five and twelve classes; **Kalpopapannaparyantāḥ** - (celestial beings) born up to Kalpa group (i.e. devas before Graiveyakas).

सूत्रार्थ : कल्पोपपन्न पर्यन्त तक के देव क्रमशः दश, आठ, पाँच और बारह प्रकार के होते हैं।

English Rendering : Devas born up to Kalpa group i.e. before Graiveyakas are of ten, eight, five and twelve divisions respectively.

टीका : भवनवासी देव दस प्रकार के, व्यन्तर देव आठ प्रकार के और ज्योतिष्क देव पाँच प्रकार के होते हैं। विमानवासी देवों के दो भेद होते हैं - कल्पोपपन्न और कल्पातीत। कल्पातीत देवों या ग्रैवेयक आदि में उत्पन्न होने वाले सभी देव 'अहमिन्द्र' होते हैं। उनमें कोई भेद नहीं है, किन्तु कल्पोपपन्न देवों के बारह भेद हैं।

Comments : There are ten sub-divisions of residential, eight of paripatetic and five of stellar celestial beings. There are further two sub divisions of heavenly beings - Kalpopapanna and Kalpātīta. All celestial beings born in Kalpātīta or Graiveyakas etc. are 'Ahamindras' (i.e. each one is Indra). There is no difference in their grades but Kalpopapanna celestial beings are having twelve divisions kinds or grades.

प्रत्येक निकायगत देवों के भेद
Classification of Celestial Beings in Each Group

इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषदात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाश्चैकशः ।।४।।

(इन्द्र-सामानिक-त्रायस्त्रिंश-पारिषद-आत्मरक्ष-लोकपाल-अनीक-प्रकीर्णक-आभियोग्य-किल्विषिकाः च एकशः।)

Indrasāmānikatrāyastriṁśapāriṣadātmarakṣalokapālā-nīkaprakīrṇakābhiyogyakilviṣikāścaikaśaḥ. (4)

शब्दार्थ : **इन्द्रसामानिकत्रायस्त्रिंशपारिषदात्मरक्षलोकपालानीकप्रकीर्णकाभियोग्यकिल्विषिकाः** – इन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंश, पारिषद, आत्मरक्ष, लोकपाल, अनीक, प्रकीर्णक, आभियोग्य एवं किल्विषिक; **च** – और; **एकशः** – प्रत्येक (निकाय) में।

Meaning of Words : **Indrasāmānikatrāyastriṁśapāriṣadātmarakṣalokapālānīkaprakīrṇakābhiyogyakilviṣikāścaikaśāḥ** - Indra, Sāmānika, Trāyastriṁśa, Pāriṣada, Ātmarakṣa, Lokapāla, Anīka, Prakīrṇaka, Ābhiyogya and Kilviṣika; **Ca** - and; **Ekaśaḥ** - in every (class of celestial beings).

सूत्रार्थ : प्रत्येक निकाय के देवों में इन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंश, पारिषद, आत्मरक्ष, लोकपाल, अनीक, प्रकीर्णक, आभियोग्य और किल्विषिक – ये दस भेद होते हैं।

English Rendering : In every group of Devas, there are ten grades - Indra, Sāmānika, Trāyastriṁśa, Pāriṣada, Ātmarakṣa, Lokapāla, Anīka, Prakīrṇaka, Ābhiyogya and Kilviṣika.

टीका : जो अन्य देवों में नहीं होते, ऐसे असाधारण अणिमा आदि गुणों से जो शोभा को प्राप्त होते हैं, वे इन्द्र कहलाते हैं। वे प्रभावशाली होकर अपने मण्डल के सर्वाधिकारी स्वामी होते हैं।

आज्ञा और ऐश्वर्य के सिवाय जो स्थान, आयु, वीर्य, परिवार, भोग और उपभोग में इन्द्र के समान होते हैं, वे सामानिक देव कहलाते हैं। ये सामानिक देव इन्द्रों के पिता, उपाध्याय और गुरु के तुल्य होते हैं।

जो मन्त्री या पुरोहित के समान होते हैं, वे त्रायस्त्रिंश कहलाते हैं। ये तैंतीस ही होते हैं, इसलिए इन्हें त्रायस्त्रिंश कहते हैं।

जो सभा में मित्र और प्रेमीजनों के समान होते हैं, वे पारिषद कहलाते हैं।

जो अङ्गरक्षक के समान होते हैं, वे आत्मरक्ष कहलाते हैं।

जो रक्षक के समान अर्थचर हैं, वे लोकपाल कहलाते हैं। तात्पर्य यह है कि जो लोक का पालन करते हैं अथवा जो दुर्ग-रक्षक के समान रक्षा करते हैं, वे लोकपाल कहलाते हैं।

सेना की तरह सात प्रकार के पदाति आदि अनीक कहलाते हैं। जैसे यहाँ पर हाथी, घोड़ा, पदाति, बैल, गन्धर्व, नर्तकी और रथ - ये सात प्रकार की सेना है, उसी प्रकार के देवों में भी होती है।

जो गाँव और शहरों में रहने वालों के समान हैं, वे प्रकीर्णक कहलाते हैं।

जो दास के समान वाहन आदि कर्म में प्रवृत्त होते हैं, वे आभियोग्य कहलाते हैं।

जो सीमा के पास रहने वालों के समान हैं, वे किल्विषिक कहलाते हैं। ये चाण्डाल के समान होते हैं।

Comments : The Devas who are endowed with extra-ordinary grandeur of occult powers like Aṇimā etc. not possessed by other celestial beings in that class are called Indras. By virtue of their grandeur, they are all in all in their class.

Those Deva who are equal to Indras in respect of duration of life, energy, attendants, enjoyment etc. except authority and splendour are called 'Sāmānika'. These Sāmānika celestial beings are regarded like father, teacher or preceptor.

Those Devas who are of the status of ministers or priests are known as 'Trāyastriṁśa'. They are thirty-three and hence are called 'Trāyastriṁśa'.

Those Devas who are like friends and companions in the court are called 'Pāriṣada'.

Those Devas who are like body-guards are known as 'Ātmarakṣa'.

Those Devas who are like police, protecting property and people, are known as 'Lokapāla'. Its meaning is that those who protect the public and property like a fort are called 'Lokapāla.'

Those Devas who are like army consisting of seven divisions are known as Anīka. For example, as we have here seven division of army

consisting of elephants, horses, pedestrians, oxen, musicians, dancers and chariots, likewise are 'Anīka' amongst celestial beings.

Those Devas who are like villagers and city dwellers are called 'Prakīrṇaka'.

Those Devas who are like servants engaged as a mode of transport- ation etc. are known as 'Ābhiyogya'.

Those Devas who are like outskirt dwellers and work as menials are known as 'Kilviṣika'.

व्यन्तर-ज्योतिष्क देवों की विशेषता
Special Classification of Peripatetic & Stellar Devas

त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्या व्यन्तरज्योतिष्काः ।।५।।

(त्रायस्त्रिंश-लोकपाल-वर्ज्याः व्यन्तर-ज्योतिष्काः।)

Trāyastriṁśalokapālavarjyā Vyantarajyotiṣkāḥ. (5)

शब्दार्थ : **त्रायस्त्रिंशलोकपालवर्ज्याः** - त्रायस्त्रिंश और लोकपालों से रहित; **व्यन्तरज्योतिष्काः** - व्यन्तर और ज्योतिष्क (देव)।

Meaning of Words : **Trāyastriṁśalokapālavarjyāḥ** - without Trāyastriṁśa and Lokapāla (grades); **Vyantarajyotiṣkāḥ** - Vyantara (peripatetic) and Jyotiṣka (Stellar) celestial beings.

सूत्रार्थ : व्यन्तर और ज्योतिष्क देवों में त्रायस्त्रिंश और लोकपाल नहीं होते।

English Rendering : Among the peripatetic and stellar celestial beings, there are no grades of Trāyastriṁśa and Lokapāla.

टीका : पूर्व सूत्र क्रमाङ्क तीन में व्यन्तर एवं ज्योतिष्क देवों के क्रमशः आठ और पाँच भेद बताये गये हैं। व्यन्तर और ज्योतिष्क देवों में त्रायस्त्रिंश और लोकपाल जाति

के देव नहीं होते। क्योंकि इन निकायों में त्रायस्त्रिंश और लोकपाल की प्रतीति कराने के लिए विशिष्ट पुण्य का अभाव है।

Comments : Under the comments of Sūtra 3, the grades of peripatetic and stellar celestial beings have been mentioned as eight and five respectively. The peripatetic and stellar celestial beings, are without 'Trāyastriṁśa' and 'Lokapāla', because these groups of celestial beings do not possess the particular merit entitiling them to these two grades of celestial beings.

आदि के दो निकायों में इन्द्रों की सङ्ख्या
Number of Indras in First two groups of Devas

पूर्वयोर्द्वीन्द्राः ।।६।।
(पूर्वयोः द्वि-इन्द्राः ।)

Pūrvayordvīndrāḥ. (6)

शब्दार्थ : **पूर्वयोः** – प्रथम दो निकायों में; **द्वीन्द्राः** – दो-दो इन्द्र (प्रत्येक प्रकार में)।

Meaning of Words : **Pūrvayoḥ** - first two groups of celestial beings; **Dvīndrāḥ** - two Indras in each kind of group.

सूत्रार्थ : प्रथम दो निकायों के प्रत्येक भेद में दो-दो इन्द्र होते हैं।

English Rendering : In the first two groups of celestial beings, there are two Indras in each group.

टीका : देवों के प्रथम दो निकाय हैं - भवनवासी और व्यन्तर। भवनवासी देवों के दस भेद सूत्र दस में बताये गये हैं और सूत्र ग्यारह में व्यन्तर देवों के आठ भेद कहे गए हैं। अतः प्रत्येक भेद में दो-दो इन्द्र होने से भवनवासी देवों में बीस इन्द्र और व्यन्तर देवों में सोलह इन्द्र होते हैं।

Comments : First two grades of ceestial beings are residential and peripatetic. Under the comments of Sūtra ten, ten grades of resi-

dential celestial beings have been stated and under the comments of Sūtra elevan, that of peripatitic has been stated as eight grades. As there are two Indras in each of these grades, there are twenty Indras of residential celestial beings and sixteen of peripatetic.

देवों का सुख
Pleasure of Celestial Beings

कायप्रवीचारा आ ऐशानात् ।।७।।

(कायप्रवीचाराः आ-ऐशानात्।)

Kāyapravīcārā Ā Aiśānāt. (7)

शब्दार्थ : **कायप्रवीचाराः** – काय प्रवीचार; **आ ऐशानात्** – ऐशान स्वर्ग पर्यन्त ।

Meaning of Words : **Kāyapravīcārāḥ** - copulation; **Ā Aiśānāt** - upto Aiśāna-heaven.

सूत्रार्थ : ऐशान स्वर्ग पर्यन्त देवों के काय से प्रवीचार होता है।

English Rendering : Celestial beings upto Aiśāna heaven satisfy their sexual urge through copulation.

टीका : मैथुन सेवन को प्रवीचार कहते हैं, अर्थात् स्त्री-पुरुष के संयोग से जो आनन्द का अनुभव होता है, उस सुखरूप कार्य का नाम प्रवीचार या मैथुन है। इस सूत्र में कहा गया है कि भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिष्क एवं सौधर्म और ऐशान विमानवासी देव अपने शरीर से प्रवीचार करते हैं। ये सभी देव संक्लिष्ट कर्मवाले होने से परस्पर स्त्री-मनुष्यों के समान ही अपनी नियोगिनी देवियों को भोगकर ये देव सुख का अनुभव करते हैं। इसका अन्तरङ्ग कारण मोह का तीव्र उदय है। देवों के शरीर में सप्त धातुओं का अभाव होने के कारण उन देवों के वीर्य का क्षरण नहीं होता। केवल वेद नो-कषाय की उदीरणा शान्त होने पर उन्हें सङ्कल्प सुख होता है।

Comments : Copulation is called 'Pravīcāra' i.e. sense of sexual gratification, derived by alliance of man-woman. It is called Pravīcāra or 'Maithuna'. This Sūtra states that celestial beings under groups of residential, peripatetic, stellar and heavenly beings of Saudharma and Aiśāna heavens derive sexual pleasure like human beings through their body-contact. All these celestial beings have nature of painful thoughts due to rise of their karmas; as such they derive pleasure through sexual copulation with women like human beings. The internal cause of such a state is the rise of intense delusion. As the bodies of celestial beings are free of seven body - elements, the celestial beings do not discharge semen. They get internal satisfaction on subsidence of their premature fruition of sexual inclination which is in the form of quasi-passions.

शेष देवों में प्रवीचार
Sexual Pleasure of Remaining Celestial Beings

शेषाः स्पर्शरूपशब्दमनःप्रवीचाराः ।।८।।

Śeṣāḥ Sparśarūpaśabdamanaḥpravīcārāḥ. (8)

शब्दार्थ : **शेषाः** – शेष (कल्पवासी देव); **स्पर्शरूपशब्दमनःप्रवीचाराः** – स्पर्श, रूप, शब्द और मन से प्रवीचार (करते हैं)।

Meaning of Words : **Śeṣāḥ** - remaining (heavenly beings); **Sparśarūpaśabdamanaḥpravīcārāḥ** - enjoyment of sexual pleasure by touch, sight, sound and thought.

सूत्रार्थ : शेष कल्पवासी स्वर्गों के देव स्पर्श, रूप, शब्द और मन में चिन्तन से प्रवीचार करते हैं।

English Rendering : Remaining celestial beings enjoy sexual pleasure by touch, sight, sound and thought.

टीका : 'शेष' शब्द से यहाँ शेष सानत्कुमार आदि कल्पवासी स्वर्ग के देवों का कथन किया गया है। सानत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्ग के देव अपनी नियोगिनी

देवाङ्गनाओं के स्पर्श मात्र से परम प्रीति को प्राप्त होते हैं। ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर,लान्तव और कापिष्ठ स्वर्ग के देव अपनी देवाङ्गनाओं के शृङ्गार, आकृति, विलास, चतुर और मनोज्ञ रूप को देखने मात्र से परम सुख को प्राप्त होते हैं। शुक्र, महाशुक्र, शतार और सहस्रार स्वर्ग के देव अपनी देवाङ्गनाओं के मधुर सङ्गीत, कोमल हास्य, ललित कथा और भूषणों के कोमल शब्दों के सुनने मात्र से परम प्रीति को प्राप्त होते हैं। आनत, प्राणत, आरण और अच्युत कल्पों के देव अपनी देवाङ्गनाओं का मन में सङ्कल्प करने मात्र से परम सुख को प्राप्त होते हैं।

इस सूत्र से यह भी स्पष्ट है कि स्पर्श इन्द्रिय के समान काम-सेवन अन्य इन्द्रियों के द्वारा भी होता है। चारित्र मोहनीय सम्बन्धी वेद कर्म के उदय-उदीरणा स्वरूप कर्मोदय के उपाय (विनाश) की तरतमता रूप से इनमें विशेषता देखी जाती है। अतः काय, स्पर्श, रूप, शब्द और मन इन उत्तरोत्तर विप्रकृष्ट हो रहे सहकारियों द्वारा ऊपर-ऊपर के देवों में मैथुन प्रवृत्ति उत्तरोत्तर न्यून होती गई है। यहाँ यह जानना भी अभीष्ट है कि देवों के समान ही उन-उन स्वर्ग की देवियाँ भी उन्हीं प्रकारों से अपने-अपने नियोगी देवों के साथ काम-सेवन से सुख प्राप्त करती हैं।

Comments : The word 'Śeṣa' used in the Sūtra is to indicate remaining heavenly beings - Sānatkumāra etc. The sexual activities of these beings is being described. The heavenly beings of Sānatkumāra and Māhendra heavens drive extreme sexual pleasure by mere touch of their female-deities. In Brahma, Brahmottara, Lāntava and Kāpiṣṭa heavens, the heavenly beings derive highest pleasure by merely looking at the charming & lovely forms and the beautiful and attractive dresses & ornaments. In Śukra, Mahāśukra, Śatāra and Sahasrāra heavens, the heavenly beings derive maximum pleasure by listening to the melodious songs, the jentle laughter, the lovely words or stories and pleasing sounds of ornaments. In Ānata, Prāṇata, Āraṇa and Acyuta Kalpas, the heavenly beings get the utmost pleasure the moment they think of their female-deities.

It is also clear from this Sūtra that sexual enjoyment is also derived from all the sense organs and not merely by touch organ. The subsidence of sexual urge and its less or more intense feelings are the result of the rise or the premature rise of the kārmic nature related to sexual inclination of conduct deluding karma. As such the sexual inclination or

urge becomes lesser and lesser in upper celestial beings and they feel satisfied in a gradually declining manner only by body touch, attractive facial expressions, sounds and thinking. It is also to be known that the female deities also derive sexual satisfaction in the same manner like that of their counter-part celestial beings.

कल्पातीत देवों में अप्रवीचार
Absence of Sexual inclination in Kalpātīta Heavenly Beings

परेऽप्रवीचाराः ।।९।।

(परे अप्रवीचाराः।)

Pare(a)pravīcārāḥ. (9)

शब्दार्थ : **परे** – आगे के (कल्पोपपन्नवासी देवों से ऊपर के ग्रैवेयक आदि के देव); **अप्रवीचाराः** – प्रवीचार से रहित (होते हैं)।

Meaning of Words : **Pare** - remaining (celestial beings of Graiveyaka & above); **Apravīcārāḥ** - without sexual desire.

सूत्रार्थ : सोलहवें स्वर्ग से ऊपर नव ग्रैवेयक आदि के देवों में प्रवीचार नहीं है।

English Rendering : Remaining celestial beings (above sixteen heavens) i.e. in nine Graiveyaka and above do not have sexual desire or passion.

टीका : अच्युत स्वर्ग से आगे नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश और पाँच अनुत्तरवासी देव प्रवीचार से रहित होने से परम सुख का अनुभव करते हैं, क्योंकि प्रवीचार केवल कामजन्य वेदना का प्रतीकार है।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि देवियों का आवागमन केवल अच्युत स्वर्ग - सोलहवें स्वर्ग - तक ही है। उससे ऊपर के नव ग्रैवेयक आदि के देव नीचे के स्वर्गों में नहीं आते हैं, इसलिए भी उनमें प्रवीचार का कारण उपस्थित नहीं होता।

Comments : The heavenly beings in nine-Graiveyakas, nine Anudiśa and five Anuttara heavens, which are above Acyuta heaven

are extremely happy because they are free from 'Pravīcāra' as 'Pravīcāra' is merely a palliative of pain of sexual urge.

It is also to be mentioned that the movement of female - deities is only upto sixteenth heaven (Acyuta) and heavenly beings from higher heavens of nine Graiveyaka etc. do not visit lower heavens and hence this factor contributing to 'Pravīcāra' in higher heavens does not exist.

भवनवासी देवों के नाम
Names of Residential Celestial Beings

भवनवासिनोऽसुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवात–
स्तनितोदधिद्वीपदिक्कुमाराः ।।१०।।

(भवनवासिनः असुर-नाग-विद्युत्-सुपर्ण-अग्नि-वात-स्तनित-उदधि-द्वीप-दिक्कुमाराः।)

Bhavanavāsino(a)suranāgavidyut-
suparṇāgnivātastanitodadhidvīpadikkumārāḥ. (10)

शब्दार्थ : **भवनवासिनः** – भवनवासी (देव); **असुर–नाग–विद्युत्–सुपर्ण–अग्नि–वात–स्तनित–उदधि–द्वीप–दिक्कुमाराः** – असुरकुमार, नागकुमार, विद्युत्कुमार, सुपर्णकुमार, अग्निकुमार, वातकुमार, स्तनितकुमार, उदधिकुमार, द्वीपकुमार, दिक्कुमार।

Meaning of Words : **Bhavanavāsinaḥ** - Bhavanavāsī (group of celestial beings); **Asura-nāga-vidyut-suparṇa-agni-vāta-stanita-udadhi-dvīpa-dikkumārāḥ -** Asurakumāra, Nāgakumāra, Vidyutkumāra, Suparṇakumāra, Agnikumāra, Vātakumāra, Stanitakumāra, Udadhikumāra, Dvīpakumāra, Dikkumāra.

सूत्रार्थ : असुरकुमार, नागकुमार, विद्युत्कुमार, सुपर्णकुमार, अग्निकुमार, वातकुमार, स्तनितकुमार, उदधिकुमार, द्वीपकुमार और दिक्कुमार – ये भवनवासी देवों के दस प्रकार हैं।

English Rendering : Asurakumāra, Nāgakumāra, Vidyutkumāra, Suparṇakumāra, Agnikumāra, Vātakumāra, Stanitakumāra,

Udadhikumāra, Dvīpakumāra and Dikkumāra are ten kinds of Bhavanavāsī celestial being (residential celestial beings).

टीका : इस अध्याय के प्रथम सूत्र की टीका में उल्लेख है कि जिन देवों का स्वभाव भवनों में रहने का होता है, वे भवनवासी देव कहलाते हैं। सूत्र तीन की टीका में उन देवों के दस भेद कहे गए हैं। इस सूत्र में उन दस प्रकार के भवनवासी देवों के नाम बताये गए हैं।

असुरकुमार जाति के भवनवासी देव प्रथम तीन पृथिवियों तक जाकर नारकियों को उनके पूर्वभव सम्बन्धी वैर का स्मरण कराकर परस्पर लड़ाते हैं। इन्हें असुर इसलिए कहा जाता है कि उनकी हिंसा आदि अनुष्ठानों में रति होती है। पर्वत और चन्दन आदि के वृक्षों पर रहने वाले देव नागकुमार कहलाते हैं, ये अधोलोकवासी फण से उपलक्षित होने के कारण नाग कहलाते हैं। जो विद्युत् के सदृश चमकते हैं, वे विद्युत्कुमार हैं। जिनके पङ्ख शोभित होते हैं, वे सुपर्णकुमार हैं। यद्यपि देवों के पङ्ख नहीं होते, लेकिन वे अपनी विक्रिया से पङ्ख बना लेते हैं। अग्निकुमार सदैव जाज्वल्यमान होकर अधोलोक में रहते हैं तथा क्रीड़ा करने के लिए अधोलोक को छोड़कर ऊपर आते हैं। वातकुमार वायु जाति के देव हैं। ये तीर्थङ्करों के दीक्षा-कल्याणक में शीतल और सुगन्धित वायु का प्रसार करते हैं तथा तीर्थङ्कर के विहार मार्ग को शुद्ध करते हैं। स्तनितकुमार देव तीर्थङ्कर के समवसरण भूमि के चारों ओर विद्युन्माला आदि से युक्त होकर गन्धोदकमय वर्षा करते हैं। ये अधोलोक में निवास करते हैं, शब्द करते हैं अथवा जिनके शब्द उत्पन्न होता है। जो उदधि (समुद्र) को धारण करते हैं या समुद्रों में क्रीड़ा करते हैं, वे उदधिकुमार कहलाते हैं। जो द्वीपों में क्रीड़ा करते हैं, वे द्वीपकुमार कहलाते हैं। जो सभी दिशाओं में क्रीड़ा करते हैं, वे दिक्कुमार जाति के भवनवासी देव हैं।

रत्नप्रभा भूमि के पङ्कबहुल भाग में असुरकुमारों के भवन हैं और खर पृथिवी भाग में ऊपर और नीचे के एक-एक हजार योजन छोड़कर शेष में अन्य नौ प्रकार के भवनवासी देवों के भवन हैं। इन सब देवों की वय और स्वभाव अवस्थित है तो भी उनके वेषभूषा, शस्त्र, यान, वाहन और क्रीड़ा आदि कुमारों के समान होती है, इसलिये सब भवनवासियों में कुमार शब्द रूढ़ है।

Comments : Under the comments of first Sūtra of this chapter, it is mentioned that those whose instinct is to reside in mansions are

called 'residential celestial beings'. Under comments of Sūtra three, ten grades of those celestial beings have been mentioned. In this Sūtra, names of those ten grades have been enumerated.

The Asurakumāra grade residential celestial beings go up to third earth of hell and make them recollect the enmities of their previous births and induce them to fight against one-another. They are called 'Asura', as they seek pleasure in violence related activities. Those who reside on mountains and sandal wood trees etc. are called 'Nāga-kumārma'. Those who are distinguished by expanded hood related to the lower world are designated as 'Nāga'. Those who sparkle like lightening are called 'Vidyutkumāra'. Those who can decorate themselves with wings are known as 'Suparṇakumāra'. Although celestial beings do not possess wings but they decorate themselves by their power of transformation. 'Agnikumāra' always reside in blazing lower world and they visit upper world from lower world for pleasure activities. 'Vātakumāra' are celestial beings of air category. They blow cool fragrant air at the time of Dīkṣā Kalyāṇaka (consecration auspicious ceremony) of the Tīrthaṅkara and also purify the path of Tīrthaṅkara's movement. Stanitakumāra celestial beings shower sacred fragrant water alround the divine pavellion of the Tīrthaṅkara. They reside in lower world and sound or words are produced by them. Those who possess ocean or make pleasure - activities in oceans are called 'Udadhikumāra'. Those who roam for pleasure in continents are known as 'Dvīpakumāra'. Those who roam for pleasure in all directions are known as 'Dikkumāra'.

The residences of Asurakumāras are located in Paṅkabahula part of Ratnaprabhā earth and other nine grades of residential celestial beings have residences in Khara part of the earth leaving one thousand Yojana each in up and down directions of it. Although their life-span and nature are all stable but their pleasure activities and their dresses, arms, transport, modes etc. are all like 'Kumāras' i.e. youth like. That is why 'Kumāra' word is in vogue with their class.

व्यन्तराः किन्नरकिम्पुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः ।।११।।

Vyantarāḥ Kinnarakimpuruṣamahoragagandharvayakṣa-rākṣasabhūtapiśācāḥ. (11)

शब्दार्थ : **व्यन्तराः** – व्यन्तर देव; **किन्नरकिम्पुरुषमहोरगगन्धर्व–यक्षराक्षसभूतपिशाचाः** – किन्नर, किम्पुरुष, महोरग, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, भूत और पिशाच।

Meaning of Words : **Vyantarāḥ** - peripatetic celestial beings; **Kinnarakimpuruṣamahoragagandharvayakṣarākṣasabhūtapiśācāḥ** - Kinnara, Kimpuruṣa, Mahoraga, Gandharva, Yakṣa, Rakṣasa, Bhūta and Piśāca.

सूत्रार्थ : किन्नर, किम्पुरुष, महोरग, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, भूत और पिशाच – ये व्यन्तर देवों के आठ भेद हैं।

English Rendering : Kinnara, Kimpuruṣa, Mahoraga, Gandharva, Yakṣa, Rākṣasa, Bhūta and Piśāca are eight kinds of peripatetic celestial beings.

टीका : सूत्र तीन की टीका में व्यन्तर जाति के देवों के आठ भेदों का उल्लेख किया गया है। इस सूत्र में उन्हीं आठ प्रकार के व्यन्तर देवों के नामों का उल्लेख है। प्रथम सूत्र की टीका में कहा गया है कि व्यन्तर देवों के निवास नाना जगहों में होते हैं। ये देव मुख्य रूप से मध्यलोक और अधोलोक में रहते हैं।

किन्नर देव समतल भूमि से बीस योजन ऊपर विजयार्ध पर्वत के इसी नाम के नगर में रहते हैं। तीर्थङ्करों के कल्याणक-उत्सवों में माङ्गलिक गीत गाते हुए ये देव आगे-आगे चलते हैं। गाने में रति रखने के कारण ये किन्नर कहलाते हैं। जो प्रायः मैथुन में रुचि रखने वाले होते हैं, वे किम्पुरुष कहलाते हैं। महोरग देवों को सर्पाकार रूप से विक्रिया करना प्रिय होता है, इसलिए वे महोरग कहलाते हैं। इन्द्र आदिकों के गायकों को गन्धर्व कहते हैं। जिनके लोभ की मात्रा अधिक होती है और जो भाण्डागार में नियुक्त किये जाते हैं, वे यक्ष कहलाते हैं। अथवा, जो जिनेन्द्र भगवान् के जन्माभिषेक

के समय अपनी देवियों के साथ मनोहर गीत गाते हैं, वे यक्ष कहलाते हैं। भूत - ये मध्य लोक में सर्वत्र पाये जाते हैं। ये मनुष्यों के शरीर में प्रवेश कर उन्हें सुख-दुःख पहुँचा सकते हैं। पिशाच - ये मृत देह में, यदि उसका छेदन-भेदन न किया गया हो, तो प्रवेश कर क्रीड़ा कर सकते हैं।

व्यन्तर देवों के निवास तीन प्रकार के होते हैं - 1. भवनपुर, 2. आवास, 3. भवन। भवनपुर द्वीप-समुद्रों में स्थित हैं। तालाब, पर्वत और वृक्ष आदि पर आवास हैं। प्रथम पृथिवी में भवन स्थित हैं। अथवा, जो निवास-स्थान मध्यलोक की समभूमि पर हैं, उन्हें भवनपुर कहते हैं; जो स्थान पृथिवी से ऊँचाई पर स्थित हैं, उन्हें आवास और जो नीचे हैं, उन्हें भवन कहते हैं।

Comments : Under the comments of Sūtra three, eight grades of peripatetic celestial beings have been mentioned. In this Sūtra, names & characteristics of those eight grades are stated. In the commentary of first Sūtra, it is stated that peripatetic celestial beings have their residences at different places. They mainly reside in Madhya Loka (middle-world) and Adho Loka (lower-world).

Kinnara celestial beings reside in the city located twenty Yojana above the levelled ground on Vijayārddha mountain; the city has the similar name. On the occasion of Tīrthaṅkaras' auspicious events, these celestials march singing ahead of procession. These are called 'Kinnara' as they are interested in singing songs. Those who are generally interested in sexual intercourse are known as 'Kimpuruṣa'. 'Mahoraga' celestial beings are fond of assuming serpant like transformative body shape, hence they are called so. Singers for Indras etc. are called 'Gandharva'. Those who have intense feeling of greed and who are appointed for protection of stores are called 'Yakṣas'. Or those who sing pleasing songs along with their deities at the time of anointment sacred ceremony of the birth of Tīrthaṅkaras are called 'Yakṣa'. 'Bhūtas' are found every where in Madhya Loka (middle-world), They are capable of entering human body and could cause them pain or pleasure. 'Piśācas' enter the dead body if it is not pierced or cut and can make various playful activities.

The residences of peripatetics are of three kinds - 1. Bhavanapura 2. Āvāsa and 3. Bhavana. Bhavanapura are located in continents & oceans. Residences in ponds, mountains, trees etc. are known as Āvāsa. Bhavanas are located in first earth. Or the residences located on level ground of Madhya Loka are called 'Bhavanapura'. The residences which are above the level - ground are known as 'Āvāsa' and those which are located below ground are called 'Bhavanas'.

ज्योतिष्क देवों के नाम
Names of Stellar Celestial Beings

ज्योतिष्काः सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाश्च ।।१२।।

(ज्योतिष्काः सूर्या-चन्द्रमसौ ग्रह-नक्षत्र-प्रकीर्णकतारकाः च।)

Jyotiṣkāḥ Sūryācandramasau Grahanakṣatra-prakīrṇakatārakāśca. (12)

शब्दार्थ : **ज्योतिष्काः** – ज्योतिष्क (देव); **सूर्याचन्द्रमसौ** – सूर्य, चन्द्रमा; **ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णकतारकाः** – ग्रह, नक्षत्र, प्रकीर्णक तारे; **च** – और।

Meaning of Words : **Jyotiṣkāḥ** - stellar celestial beings; **Sūryācandramasau** - sun, moon; **Grahanakṣatraprakīrṇakatārakāḥ** - planets, constellations and scattered stars; **Ca -** and.

सूत्रार्थ : सूर्य, चन्द्र, ग्रह, नक्षत्र और प्रकीर्णक तारे ये पाँच प्रकार के ज्योतिष्क देव हैं।

English Rendering : Sun, moon, planets, constellations and scattered stars are five kinds of stellar celestial beings.

टीका : सूत्र तीन की टीका में कथन है कि ज्योतिष्क देव पाँच प्रकार के होते हैं। उन पाँच नामों का कथन इस सूत्र में किया गया है। ये सभी ज्योतिष्क देव ज्योतिर्मय हैं,

इसलिए इन्हें ज्योतिष्क देव कहा गया है। इनमें चन्द्रमा इन्द्र है और सूर्य प्रतीन्द्र है। ज्योतिष्क देव समतल भूमि से सात सौ नब्बे योजन ऊपर जाकर एक सौ दस योजन पर्यन्त निवास करते हैं। सबसे पहले तारा मण्डल हैं जो समतल भूमि से सात सौ नब्बे योजन ऊँचाई पर अवस्थित हैं। उससे दस योजन ऊपर सूर्य हैं। उससे अस्सी योजन ऊपर चन्द्रमा हैं। उससे चार योजन ऊपर नक्षत्र हैं। उससे चार योजन ऊपर बुध हैं। उससे तीन योजन ऊपर शुक्र, उससे तीन योजन ऊपर गुरु, उससे तीन योजन ऊपर मङ्गल और उससे तीन योजन ऊपर शनि अवस्थित हैं।

सभी ज्योतिष्क देव विमानों में निवास करते हैं और मनुष्य लोक में ये विमान निरन्तर गमन करते रहते हैं। चूँकि ये देव मध्यलोक में स्थित विमानों में गमन करते हैं, इसलिए इन्हें विमानवासी देव नहीं कहा जाता। ऊर्ध्वलोक में स्थित विमानों में निवास करने वाले देवों को ही विमानवासी देव कहा जाता है।

Comments : Under the comments of Sūtra three, it is mentioned that stellar order of celestial beings are of five kinds. Those five names are stated in this Sūtra. All these celestial beings are luminary and as such they are called 'stellars'. Among them, the moon is the 'Indra' and the sun is 'Pratīndra'. All the stellar celestial beings are located in an area of one hundred ten (110) Yojanas above seven hundred & ninety (790) Yojanas from ground-level. First of all is the group of stars i.e. constellation which is located at a height of 790 Yojanas from ground level. At a height of ten Yojanas from this is the sun. At a height of eighty Yojanas above it is the moon. Four Yojanas above this are located planets; four Yojanas above them, is located mercury; three Yojanas above it is Jupiter. Three Yojanas above it is mars and three Yojanas above it is saturn.

All the stellar celestial beings reside in Vimānas which move incessantly in the human-world. As these celestial beings reside in the middle-world (Madhya Loka), they are not included as heavenly beings. Only those celestial beings who reside in upper world (Urdhva Loka) are called 'heavenly beings'.

मेरुप्रदक्षिणा नित्यगतयो नृलोके ।।१३।।

(मेरु-प्रदक्षिणाः नित्य-गतयः नृ-लोके।)

Merupradakṣiṇā Nityagatayo Nṛloke. (13)

शब्दार्थ : **मेरुप्रदक्षिणाः** – मेरु (पर्वत की) प्रदक्षिणा (करना); **नित्यगतयः** – नित्य गमन (करना); **नृलोके** – मनुष्य लोक में।

Meaning of Words : **Merupradakṣiṇāḥ** - motion around Meru (mountain); **Nityagatayaḥ** - (uninterrupted and) continuous motion; **Nṛloke** - In human world.

सूत्रार्थ : ज्योतिष्क देव मनुष्य लोक में मेरु की प्रदक्षिणा करते हुए नित्य गमन करते हैं।

English Rendering : Stellar celestial beings go on moving (uninterrupted) continuously around Meru (mountain) in human-world.

टीका : तीसरे अध्याय के सूत्र 35 में यह उल्लेख है कि मनुष्य लोक पैंतालीस लाख योजन विस्तार वाला है। इसमें ज्योतिष्क देव प्रति समय मेरु की प्रदक्षिणा देते हुए भ्रमण करते रहते हैं। 'नित्य गति' का अर्थ है कि मनुष्य लोक में ज्योतिष्क देवों के गमन को कोई एक क्षण भी रोकने में समर्थ नहीं है। गमन में रत जो आभियोग्य जाति के देव हैं, उनसे प्रेरित होकर ज्योतिष्क देवों के विमानों का गमन होता रहता है । ज्योतिष्क देव मेरु पर्वत की प्रदक्षिणा उससे ग्यारह सौ इक्कीस योजन दूर रह कर ही करते हैं। मनुष्य लोक में कुल एक सौ बत्तीस चन्द्रमा और एक सौ बत्तीस ही सूर्य हैं। चन्द्रमा इन्द्र है और उसके परिवार में एक सूर्य रूप प्रतीन्द्र, अट्ठाईस नक्षत्र, अठासी ग्रह और छयासठ हजार नौ सौ पचहत्तर कोड़ाकोड़ी ताराएँ हैं ।

एक सूर्य जम्बूद्वीप की परिक्रमा दो दिन-रात में पूरी करता है। सूर्य के घूमने की एक सौ चौरासी (184) गलियाँ हैं। चन्द्रमा पूरी प्रदक्षिणा में दो दिन-रात से कुछ अधिक समय लगाता है। चन्द्रमा के उदय में हीनाधिकता इसी से आती है।

Comments : It is mentioned under comments of Sūtra 35 of chapter three that the humanworld has an extent of 45 Lākha Yojanas. The stellar celestial beings incessantly continue to move around Meru in the humanworld. 'Nitya Gati' is intended to convey that no one is capable of stopping even for a moment the motion of stellar celestial beings in the humanworld. The Vimānas of the stellar celestial beings continue to be moved by the celestial beings known as 'Ābhiyogya' who enjoy in providing motion to these Vimānas. The stellar celestial beings move around Meru keeping a distance of one thousand one hundred & twenty-one (1121) Yojanas. In the human world, there are one hundred & thirty-two moons and same number of Suns. The Moon is the Indra and his family comprises of one Sun as Pratīndra, twenty-eight constellations (Nakṣatras), eighty eight planets (Grahas) and sixty-six thousand nine hundred-seventy-five Koḍakoḍi (i.e. 1 crore x 1 crore) scattered stars.

One Sun takes two days & nights to make one round around Jambūdvīpa. There are one hundred & eighty-four tracks of movement of sun. The moon in its movement takes somewhat more than two days-nights to complete one round. This causes time differential in the rise of the moon.

ज्योतिष्क देवों के गमन से समय विभाग
Division of Time as a Result of Movement of Stellar Beings

तत्कृतः कालविभागः ।।१४।।

Tatkṛtaḥ Kālavibhāgaḥ. (14)

शब्दार्थ : **तत्कृतः** - उन (ज्योतिष्क देवों के द्वारा) की गई (गति से); **कालविभागः** - काल का विभाग (होता है)।

Meaning of Words : **Tatkṛtaḥ** - by (the movement of) those (stellar celestial beings); **Kālavibhāgaḥ** - (is) division of time-determination.

सूत्रार्थ : ज्योतिष्क देवों की गति से दिन-रात्रि आदि में काल का विभाग होता है।

English Rendering : The movement of stellar beings determines the division of time i.e. day or night.

टीका : काल के दो भेद हैं - निश्चय और व्यवहार काल। ज्योतिष्क देवों की प्रदक्षिणा के अनुसार समय, आवलि, घटी, मुहूर्त, दिन-रात्रि, माह आदि में व्यवहार काल का विभाजन होता है।

Comments : Time is of two kinds - Niścaya (real) and Vyvahāra (practical or conventional). Based on the movement of stellar celestial beings, the conventional time is further divided in to Samaya, Āvali, Ghaṭī, Muhūrta, day-night, month etc.

मनुष्य लोक के बाहर ज्योतिष्क देव अवस्थित
Stellar Beings are Stationary Outside Human-world

बहिरवस्थिताः ।।१५।।

(बहिः-अवस्थिताः।)

Bahiravasthitāḥ. (15)

शब्दार्थ :- **बहिः** - (मनुष्य लोक के) बाहर; **अवस्थिताः** - (ज्योतिष्क देव) अवस्थित (हैं)।

Meaning of Words : **Bahiḥ** - outside (the human-world); **Avasthitāḥ** - (stellar beings are) stationary.

सूत्रार्थ : मनुष्य लोक के बाहर ज्योतिष्क देव अवस्थित हैं।

English Rendering : Stellar beings are stationary outside the human-world.

टीका : इस सूत्र की रचना का उद्देश्य यह बताना है कि मनुष्य लोक के बाहर स्थित ज्योतिष्क देवों का गमन नहीं होता, अपितु वे एक ही स्थान पर अवस्थित रहते हैं।

Comments : The purpose of the composition of this Sūtra is to indicate that outside human-world, the stellar celestial beings do not move but remain stationary at their designated locations.

वैमानिक देव
Heavenly Beings

वैमानिकाः ।।१६।।

Vaimānikāḥ. (16)

शब्दार्थ : **वैमानिकाः** - (चौथे निकाय के देव) वैमानिक (हैं)।

Meaning of Words : **Vaimānikāḥ** - heavenly celestial beings (of the fourth group).

सूत्रार्थ : चौथे निकाय के देव वैमानिक हैं।

English Rendering : Celestial beings of the fourth group are heavenly beings.

टीका : विमानों में निवास करने वाले देव वैमानिक देव कहलाते हैं। वे देव अन्य देवों की अपेक्षा अधिक पुण्यशाली होते हैं। विमान तीन प्रकार के हैं - इन्द्रक, श्रेणीबद्ध और पुष्प-प्रकीर्णक। जो इन्द्र के समान मध्य में स्थित हैं, वे इन्द्रक विमान हैं। जो इन्द्रक विमानों के चारों ओर आकाश के प्रदेशों की पङ्क्ति के समान स्थित हैं, वे श्रेणीबद्ध विमान हैं। बिखरे हुए फूलों के समान विदिशाओं में जो विमान अवस्थित हैं, वे पुष्प-प्रकीर्णक हैं।

Comments : Celestial beings residing in Vimānas are named 'Vaimānikas' (i.e. heavenly beings). They are more meritorious as compared to other groups of celestial beings. Vimānas are of three kinds - Indraka, Śreṇībaddha and Puṣpa-Prakīrṇaka. The Vimānas located in the middle like Indra are known as 'Indraka'. Those which are situated in the four directions like rows of space-points are known as ' Śreṇībaddha'. Those which are scattered like flowers in the intermediate points in all directions are known as 'Puṣpa-Prakīrṇaka'.

कल्पोपपन्नाः कल्पातीताश्च ।।१७।।

(कल्प-उपपन्नाः कल्प-अतीताः च।)

Kalpopapannāḥ Kalpātītāśca. (17)

शब्दार्थ : **कल्पोपपन्नाः** – कल्पों में उत्पन्न होने वाले (वैमानिक देव); **कल्पातीताः** – कल्पों से आगे वाले (वैमानिक देव); **च** – और (ऊर्ध्व लोक में स्थित देवों के सम्बन्ध में)।

Meaning of Words : **Kalpopapannāḥ** - Vaimānika Devas born in Kalpas, **Kalpātītāḥ** - heavenly beings born beyond Kalpas; **Ca** - and (this is about celestial beings residing in the upper-world).

सूत्रार्थ : वैमानिक देव दो प्रकार के हैं – कल्पोपपन्न और कल्पातीत।

English Rendering : Heavenly beings are of two kinds - Kalpopapanna i.e. those residing in Kalpas and Kalpātīta i.e. those residing above the Kalpas.

टीका : इन्द्र आदि दस प्रकार की कल्पनाएँ जिनमें पाई जाएँ, वे कल्पोपपन्न देव हैं। ऐसे सोलह कल्प हैं। जहाँ पर इन्द्र आदि की कल्पना नहीं है, जो सभी अहमिन्द्र हैं, वे कल्पातीत हैं। नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश तथा पाँच अनुत्तर विमानवासी देव कल्पातीत हैं। ये संसार के सर्वाधिक सुखों को पाकर भी विरागी होते हैं। वे असूया, पर-निन्दा, आत्म-प्रशंसा, मत्सर आदि से दूर रहते हुए केवल सुखमय जीवन बिताते हैं। ये महा द्युतिमान, समचतुरस्रसंस्थान, विक्रिया ऋद्धिधारी, अवधिज्ञानी, निष्प्रवीचारी एवं शुक्ल लेश्याओं वाले होते हैं। ये हंस के समान श्वेत शरीर को धारण करते हैं। ये केवल सुखमय होकर हर्षयुक्त होते हुए निरन्तर क्रीड़ा करते रहते हैं। इनके शरीर अधो ग्रैवेयक मेंह्वढाई अरत्नि प्रमाण, मध्य ग्रैवेयक में दो अरत्नि प्रमाण तथा उपरिम ग्रैवेयकमें एवं नव अनुदिशों में डेढ़ अरत्नि प्रमाण तथा पाँच अनुत्तर विमानों में रहने वाले अहमिन्द्रों के शरीर का प्रमाण एक अरत्नि प्रमाण होता है।

Comments : Those heavenly beings who are having ten kinds of grades like Indra etc. are known as 'Kalpopapanna'. There are such sixteen 'Kalpas'. Those who do not have any such grades and who all are 'Ahamindras' are known as 'Kalpātīta'. Heavenly beings residing in nine 'Graiveyakas', nine 'Anudiśas' and five 'Anuttara Vimānas' are 'Kalpātīta'. They are above attachment although they have maximum mundane pleasures. They continue to live happily keeping themselves free from malice or jealousy, others defamation, self-praise, envy etc. They are bestowed with extreme luster, balanced body formation of organs, extra-ordinary powers, having clairvoyance, without any sexual inclinations and possess only pure thought-colouration. They continue to enjoy life always remaining happy and gay. The body height of those who reside in lower 'Graiveyakas' is $2\frac{1}{2}$ cubits (Aratni), in middle Graiveyakas 2 cubits and upper Graiveyakas & in Anudiśas $1\frac{1}{2}$ cubits and the Ahamindras who reside in five Anuttara heavens have only one cubit body height.

वैमानिक देवों के विमानों की स्थिति

Arrangement of Vimānas of Heavenly Beings

उपर्युपरि ।।१८।।

(उपरि-उपरि।)

Uparyupari. (18)

शब्दार्थ : **उपर्युपरि** - ऊपर-ऊपर।

Meaning of Words : **Uparyupari** - one over the other.

सूत्रार्थ : (ये सब विमान) ऊपर-ऊपर हैं।

English Rendering : All these Vimānas (of heavenly beings) are one over the other.

टीका : वैमानिक देव ज्योतिष्क देवों के समान तिरछे या व्यन्तर देवों के समान विषम रूप से नहीं रहते। प्रत्येक पटल में दो-दो स्वर्ग समीपवर्ती हैं। जिस पटल में दक्षिण दिशा में सौधर्म स्वर्ग है, उसी पटल की उत्तर दिशा में उसके समीपवर्ती ऐशान स्वर्ग है। इसी प्रकार प्रत्येक पटल में दो-दो स्वर्ग हैं। ऐसे प्रत्येक पटल एक दूसरे के ऊपर-ऊपर स्थित हैं।

Comments : The Vaimānika celestial beings are not situated transverse like the stellars nor do they have uneven habitation like peripatetics. Every layer has two heavens side by side. Saudharma heaven is located on the southern side of the layer. On the northern side of this layer closely located is Aiśāna heaven. Similar is the arrangement of two heavens in every layer. Such layers are located one over the other.

वैमानिक देवों के निवास-स्थान
Names of Residences of Heavenly Beings

सौधर्मैशानसानत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मब्रह्मोत्तरलान्तवकापिष्ठशुक्रमहाशुक्र-शतारसहस्रारेष्वानतप्राणतयोरारणाच्युतयोर्नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्तजयन्तापराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च ।।१९।।

(सौधर्म-ऐशान-सानत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर-लान्तव-कापिष्ठ-शुक्र-महाशुक्र-शतार-सहस्रारेषु आनत-प्राणतयोः आरण-अच्युतयोः नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-वैजयन्त-जयन्त-अपराजितेषु सर्वार्थसिद्धौ च।)

Saudharmaiśānasānatkumāramāhendrabrahmabrahmottaralāntavakapiṣṭhaśukramahāśukraśatārasahasrāreṣvānataprāṇatayorāraṇācyutayornavasu Graiveyakeṣu Vijayavaijayantajayantāparājiteṣu Sarvārthasiddhau Ca. (19)

शब्दार्थ : **सौधर्म-ऐशान-सानत्कुमार-माहेन्द्र-ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर-लान्तव-कापिष्ठ-शुक्र-महाशुक्र-शतार-सहस्रारेषु** - सौधर्म, ऐशान, सानत्कुमार, माहेन्द्र,

ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र, महाशुक्र, शतार, सहस्रारों में; **आनत-प्राणतयोः** - आनत-प्राणतों में; **आरण-अच्युतयोः** - आरण-अच्युतों में, **नवसु ग्रैवेयकेषु** - नव ग्रैवेयकों में (एवं अनुदिशों में); **विजय-वैजयन्त-जयन्त-अपराजितेषु** - विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजितों में; **सर्वार्थसिद्धौ च** - और सर्वार्थसिद्धि में (वैमानिक देव रहते हैं)।

Meaning of Words : **Saudharma-aiśāna-sānatkumāra-māhendra-brahma-brahmottara-lāntava-kāpiṣṭha-śukra-mahāśukra-satāra-sahasrāreṣu** - in Saudharma, Aiśāna, Sānatkumāra, Māhendra, Brahma, Brahmottara, Lāntava, Kāpiṣṭha, Śukra, Mahāśukra, Śatāra, Sahasrāra (heavens); **Ānata-prāṇatayoḥ** - in-Ānata-Prāṇata (heavens); **Āraṇa-acyutayoḥ** - In Āraṇa - Acyuta (heavens); **Navasu Graiveyakeṣu -** in nine Graiveyakas (including nine Anudiśas); **Vijaya-vaijayanta-jayanta-Aparājiteṣu -** in Vijaya, Vaijayanta, Jayanta and Aparājitas (heavens); **Sarvārthasiddhau Ca** - and in Sarvārthasiddhi (celestial beings reside).

सूत्रार्थ : सौधर्म, ऐशान, सानत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र, महाशुक्र, शतार, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण, अच्युत तथा नव ग्रैवेयक, नव अनुदिश, विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वार्थसिद्धि में वैमानिक देव रहते हैं।

English Rendering : Heavenly beings reside in Saudharma, Aiśāna, Sānatkumāra, Māhendra, Brahma, Brahmottara, Lāntava, Kāpiṣṭha, Śukra, Mahāśukra, Śatāra, Sahasrāra, Ānata, Prāṇata, Āraṇa, Ācyuta - and in nine Graiveyakas, nine Anudiśas, Vijaya, Vaijayanta, Jayanta, Aparājita and Sarvārthasiddhi heavens.

टीका : जिस स्वर्ग में सुधर्मा नाम की देव-सभा है, वह स्वर्ग सौधर्म है तथा इस कल्प से सम्बन्ध होने से इन्द्र भी सौधर्म है। इसी प्रकार ईशान नाम की देव-सभा जहाँ है, वह ऐशान स्वर्ग है तथा वहाँ का इन्द्र ऐशान इन्द्र है। इसी प्रकार अन्य कल्पों/स्वर्गों और उनके इन्द्रों के भी नाम हैं।

कल्पवासी देवों के बारह इन्द्र हैं। इनके नाम हैं - सौधर्म, ऐशान, सानत्कुमार, माहेन्द्र; ब्रह्म और ब्रह्मोत्तर कल्पों में एक ब्रह्म नामक इन्द्र है। लान्तव और कापिष्ठ दो

कल्पों में एक लान्तव नामक इन्द्र है। शुक्र और महाशुक्र कल्पों में एक शुक्र नाम का इन्द्र है। शतार और सहस्रार कल्पों में एक शतार नाम का इन्द्र है तथा आनत, प्राणत, आरण और अच्युत इन चार कल्पों में एक-एक इन्द्र है। इस प्रकार कुल सोलह कल्पों में बारह इन्द्र हैं।

लोकाकाश को पुरुषाकार माना है। उस लोकपुरुष की ग्रीवा के स्थानीय होने से ग्रीवा और ग्रीवा में होने वाले ग्रैवेयक विमान हैं। ये नव ग्रैवेयक एक के ऊपर एक अवस्थित हैं। सुदर्शन,अमोघ, सुप्रबुद्ध, यशोधर, सुभद्र, सुविशाल, सुमनस, सौमनस और प्रीतिङ्कर इनके नाम हैं। नव अनुदिश प्रत्येक दिशा में अवस्थित हैं, इसलिए इन्हें अनुदिश कहते हैं। इनके नाम हैं - आदित्य, अर्चि, अर्चिमाली, वैरोचन, प्रभास, अर्चिप्रभ, अर्चिमध्य, अर्चिरावर्त और अर्चिविशिष्ट। अनुदिशों में एक इन्द्रक, चार श्रेणीबद्ध तथा चार प्रकीर्णक विमान होते हैं। नव अनुदिश एवं पाँच अनुत्तर विमानवासी सभी देव सम्यग्दृष्टि ही होते हैं।

विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित और सर्वार्थसिद्धि ये पाँच अनुत्तर विमान हैं। विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित वाले देव दो मनुष्य भव से अधिक संसार भ्रमण नहीं करते। सर्वार्थसिद्धि वाले एक भवावतारी होते हैं।

Comments : The heaven in which Sudharmā divine council chamber is located is known as Saudharma heaven and because of Indra's association with this Kalpa, the Indra is also known as Saudharma Indra. Similarly the heaven in which Aiśāna divine council chamber is located is known as Aiśāna heaven and Indra residing in that heaven is known as Aiśāna Indra. Similarly the names of other heavens/Kalpas and their Indras are associated.

There are twelve Indras of Kalpavāsī heavenly beings. Their names are - Saudharma, Aiśāna, Sānatkumāra, Māhendra; Brahma and Brahmottara heavens; Lāntava of Lāntava & Kāpiṣṭha heavens, Śukra of Śukra & Mahāśukra heavens; Śatāra of Śatāra & Sahasrāra heavens and Ānata, Prāṇata, Āraṇa & Acyuta heavens have one Indra each. In this manner, there are only twelve Indras in sixteen heavens or Kalpas.

Lokākāśa (cosmic space) shape is regarded as man standing with arms akimbo. Graiveyaka heavens are situated in the upper-world like the neck position in a human body. These nine Graiveyakas are located one over the other. Their names are Sudarśana, Amogha, Suprabuddha,

Yaśodhara, Subhadra, Suviśāla, Sumanasa, Saumanasa and Pritiṅkara. Nine Anudiśas are located in every direction and as such they are known as Anudiśa. Their names are Āditya, Arci, Arcimālī, Vairocana, Prabhāsa, Arciprabha, Arcimadhya, Arcirāvarta and Arciviśiṣṭa. Among Anudiśa heaven there is one Indraka Vimāna, four Śreṇībaddha and four Prakīrṇaka Vimānas. All heavenly beings residing in nine Anudiśa and five Anuttara heavens are Right Believers.

Vijaya, Vaijayanta, Jayanta, Aparājita and Sarvārthasiddhi are five Anuttara Vimānas. Those who are residing in Vijaya, Vaijayanta, Jayanta & Aparājita Vimānas do not have mundane transmigration for more then two human births. Those in Sarvārthasiddhi get salvation in their immediate human-birth.

वैमानिक देवों की विशेषता
Special Virtues of Heavenly Beings

स्थितिप्रभावसुखद्युतिलेश्याविशुद्धीन्द्रियावधिविषयतोऽधिकाः ।।२०।।

(स्थिति-प्रभाव-सुख-द्युति-लेश्या-विशुद्धि-इन्द्रिय-अवधि-विषयतः अधिकाः।)

Sthitiprabhāvasukhadyutileśyāviśuddhīndri-
yāvadhiviṣayato(a)dhikāḥ. (20)

शब्दार्थ : **स्थिति** - देव आयु के उदय से उस भव में शरीर के साथ रहना; **प्रभाव** - शाप और अनुग्रह शक्ति; **सुख** - इन्द्रिय विषयों के आनन्द का अनुभव करना; **द्युति** - शरीर आदि की कान्ति; **लेश्याविशुद्धि** - भावों की निर्मलता; **इन्द्रिय (विषय)** - इन्द्रियों के विषय; **अवधिविषयतः** - अवधिज्ञान के क्षेत्र आदि के विषय; **अधिकाः** - (ऊपर-ऊपर के देवों में) अधिक-अधिक (हैं)।

Meaning of Words : **Sthiti** - owing to the fruition of life-karma as celestial being, soul's association with body in that life; **Prabhāva** - capacity to confer benefits or inflict pain on others; **Sukha** - enjoyment

of sensual pleasures; **Dyuti** - splendour of body etc., **Lesyāviśuddhi** - purity of thought complexion; **Indriya** (Viṣaya) - capacity of sense-organs; **Avadhiviṣayataḥ** - range of clairvoyance etc. **Adhikāḥ** - (higher higher category of heavenly beings are) more superior to the lower ones.

सूत्रार्थ : ऊपर-ऊपर के वैमानिक देवों के स्थिति, प्रभाव, सुख, द्युति, लेश्या की विशुद्धता, इन्द्रिय विषय और अवधिज्ञान का विषय अधिक-अधिक होता है।

English Rendering : Life-span, capacity to confer benefits or inflict pain on others, enjoyment of sensuous pleasures, splendour of body etc., purity of thought complexion, capacity of sense organs and range of knowledge like that of clairvoyance etc. are more & more amongst the higher category of heavenly beings as compared to the lower ones.

टीका : पहले कल्पयुगलवासी देवों की अपेक्षा ऊपर-ऊपर स्थित दूसरे युगल कल्पवासी और दूसरे से तीसरे युगल कल्पवासी आदि के देवों की आयु, शाप और अनुग्रहरूप शक्ति, सुख का अनुभव, शरीर आदि की कान्ति, लेश्या की विशुद्धि, इन्द्रियों की उपयोग क्षमता और अवधिज्ञान के विषय और उनकी सीमा अधिक होती है। कल्पवासी देवों की अपेक्षा कल्पातीत देवों के आयु, प्रभाव, सुख, द्युति, लेश्या की विशुद्धता, इन्द्रिय-क्षमता और अवधिज्ञान भी अधिक होते हैं। इसी प्रकार कल्पातीत देवों में भी नव ग्रैवेयक देवों की अपेक्षा नव अनुदिश के देव अधिक क्षमता वाले होते हैं। अनुदिश देवों की अपेक्षा पाँच अनुत्तर विमानों के देवों में अधिक आत्मिक सुख और प्रभाव होता है। अनुत्तर विमानों में भी सबसे अधिक प्रभावशाली और आत्मिक सुख तो एक भवावतारी सर्वार्थसिद्धि के देवों के ही होता है।

ये सभी देव अत्यन्त प्रभावशाली होते हैं। एक पल्योपम प्रमाण वाले देव पृथिवी के छह खण्डों को उखाड़ने में, उनमें स्थित मनुष्य और तिर्यञ्चों को मारने अथवा उनका पोषण करने में समर्थ होते हैं।

Comments : The life-span, the power of inflicting pain or to confer benefits, enjoyment of sensuous pleasures, splendour of body etc., purity of thought - colouration, capacity of sense organs, the range and subject of clairvoyance of the second heavens an all other above heavens are superior to that of those residing in just lower heavens. Similarly those residing in third-heaven and above them are having

superior virtues/powers as compared to the second heavens. The life-span, power of inflicting pain or to confer benefits, enjoyment, splendour, purity of thoughts, capacity of senses and range of clairvoyance knowledge of Kalpātīta celestial beings is superior to that of Kalpopapanna celestial beings. In the similar manner, among Kalpātīta heavenly beings, those in nine Anudiśa havens are having superior power as compared to those of Graiveyakas. Those residing in five Anuttara heavens enjoy better bliss and powers as compared to those in Anudiśa heavens. Among those in Anuttara heavens, the maximum enjoyment of bliss and splendour is possessed by those who are in Sarvārthasiddhi heaven and are to attain salvation in their immediate next human birth.

All these heavenly beings are very powerful. Those whose life-span is one Palyopama are capable of destroying all the six parts of the earth, kill all the humans & Tiryañcas residing therein or to inflict pain or shower benefits on them.

वैमानिक देवों की अन्य विशेषताएँ
Other Special Virtues of Heavenly Beings

गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतो हीनाः ।।२१।।

(गति-शरीर-परिग्रह-अभिमानतः हीनाः।)

Gatiśarīraparigrahābhimānato Hīnāḥ. (21)

शब्दार्थ : **गतिशरीरपरिग्रहाभिमानतः** - (ऊपर-ऊपर स्थित देवों की) गति, शरीर, परिग्रह और अभिमान; **हीनाः** - हीन (होते हैं)।

Meaning of Words : **Gatiśarīraparigrahābhimānataḥ** - (of higher & higher category) motion, stature, attachment and pride; **Hīnāḥ** - less & less.

सूत्रार्थ : गति, शरीर, परिग्रह और अभिमान (ऊपर-ऊपर के देवों में) कम-कम होता है।

English Rendering : Motion, stature, attachment and pride (of the heavenly beings of higher & higher category) is lesser & lesser.

टीका : एक स्थान (देश) से दूसरे स्थान के प्राप्त करने का जो साधन है, उसे गति कहते हैं। ऊपर-ऊपर स्थित देवों में क्रमशः गति की हीनता होती है, क्योंकि उनमें विषय-अभिलाषा कम होती जाती है। अहमिन्द्रों (कल्पातीत देवों) का अपने स्थान को छोड़कर विहार नहीं होता, क्योंकि शुक्ल लेश्या के प्रभाव से अपने ही स्थान में उन्हें जो आत्मिक सुख की अनुभूति प्राप्त होती है, वह अन्यत्र कहीं प्राप्त नहीं होती।

वैक्रियिक शरीर की अवगाहना ऊपर-ऊपर के देवों में कम होती है। शरीर के होने पर ही परिग्रह का सञ्चय होता है तथा शरीर के होने पर ही 'यह मेरा है' ऐसी बुद्धि उत्पन्न होती है। अवगाहना कम होने से परिग्रह सञ्चय की भावना कम होती जाती है।

लोभ कषाय के उदय से विषयों के संग को परिग्रह कहते हैं। ऊपर के देवों में परिग्रह कम होता है और पुण्यातिशय अधिक है।

मान कषाय के उदय से उत्पन्न हुए अहङ्कार को अभिमान कहते हैं। ऊपर के देवों में अभिमान क्रमशः कम-कम होता जाता है।

Comments : Motion is the cause of movement from one place to another. Motion goes on decreasing gradually amongst the higher heavenly beings as compared to the immediately preceding ones because their desire for sensuous enjoyment goes on declining. Ahamindras (Kalpātītas) do not move outside their own place because they enjoy better bliss of their pure white thought-colouration at their own place, not available at any other place.

The transformative body-height of the higher heavenly beings reduces. Possessions i.e. accumulation is for the sake of a body and the feeling of 'It is mine' is manifested only because of body. The feeling for accumulation of possessions declines with lesser extent of body. Rise of greed passion causing accumulation of pleasure-objects is 'possessions'. Accumulation or desire for possessions is less in higher heavenly beings and excellence of merit is more.

Arrogance or pride is the result of the rise of pride passion. Pride goes on reducing gradually in higher category of heavenly beings.

पीतपद्मशुक्ललेश्या द्वित्रिशेषेषु ।।२२।।

(पीत-पद्म-शुक्ल-लेश्याः द्वि-त्रि-शेषेषु।)

Pītapadmaśuklaleśyā Dvitriśeṣeṣu. (22)

शब्दार्थ : **पीतपद्मशुक्ललेश्याः** – पीत, पद्म और शुक्ल लेश्या; **द्वित्रिशेषेषु** – दो, तीन और शेष (कल्प-युगलों) में।

Meaning of Words : **Pītapadmaśuklaleśyāḥ** - yellow, lotus hue and pure white thought - colouration; **Dvitriśeṣeṣu** - two, three and remaining (couple groups of celestial beings).

सूत्रार्थ : दो कल्प-युगल तक पीतलेश्या, उससे आगे के तीन कल्प-युगल तक पद्मलेश्या तथा शेष कल्पों के एवं कल्पातीत देवों के शुक्ल लेश्या होती है।

English Rendering : Up to the first two couple-groups of heavens, the heavenly beings are of yellow thought - colouration, the next three couple groups (i.e. up to tenth heaven) are having lotus hue thought colouration and in the remaining groups & Kalpātīta heavenly beings, the thought - colouration is pure white.

टीका : सौधर्म और ऐशान कल्पों के देवों की पीत लेश्या होती है। सानत्कुमार और माहेन्द्र कल्पों के देवों की पीत और पद्म लेश्याएँ होती हैं। ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर एवं लान्तव-कापिष्ठ कल्पों के देवों की पद्म लेश्या होती है। शुक्र-महाशुक्र एवं शतार-सहस्रार कल्पों के देवों की पद्म और शुक्ल लेश्याएँ होती हैं। आनत-प्राणत एवं आरण-अच्युत कल्पवासी देवों तथा कल्पातीत - नव ग्रैवेयक और नव अनुदिश देवों की शुक्ल लेश्या ही होती है। पाँच अनुत्तर देवों की परम शुक्ल लेश्या होती है।

Comments : Thought - colouration of the heavenly beings of Saudharma & Aiśāna heavens is yellow. Those in Sānatkumāra and Māhendra heavens possess yellow & lotus hue thought colourations. Those in Brahma - Brahmottara and Lāntava - Kāpīṣṭha heavens possess lotus hue thought colouration. Those in Śukra - Mahāśukra and

Śatāra - Sahasrāra heavens possess lotus hue and pure white thought colouration. Those in Ānata - Prāṇata and Āraṇa & Acyuta Kalpavāsī heavens and those in Kalpātīta Graiveyakas and nine Anudiśa heavens possess pure white thought-colouration. Those in five Anuttara heavens possess absolutely pure white thought-colouration.

कल्पों की व्यवस्था
Arrangement of Kalpas

प्राग्ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः ।।२३।।

(प्राक्-ग्रैवेयकेभ्यः कल्पाः।)

Prāggraiveyakebhyaḥ Kalpāḥ. (23)

शब्दार्थ : **प्राक्** – पहले; **ग्रैवेयकेभ्यः** – ग्रैवेयकों से; **कल्पाः** – कल्प (सञ्ज्ञा होती है)।

Meaning of Words : **Prāk** - prior to; **Graiveyakebhyaḥ** - the Graiveyakas; **Kalpāḥ** - (are known as) Kalpa.

सूत्रार्थ : (सौधर्म कल्प से लेकर) ग्रैवेयकों से पहले तक कल्प सञ्ज्ञा है।

English Rendering : (Starting from Saudharma Kalpa) prior to the Graiveyakas (heavens) are known as Kalpas.

टीका : जिन वैमानिक देवों में इन्द्र, सामानिक आदि के भेद हैं, वे कल्प कहलाते हैं और जहाँ इस प्रकार की कल्पना नहीं है, वे सभी विमानवासी देव कल्पातीत कहलाते हैं। नौ ग्रैवेयकों सहित उनसे ऊपर के सभी देव कल्पातीत कहलाते हैं। सौधर्म कल्प से अच्युत कल्प तक के सभी देव कल्पों में निवास करने से कल्पोपपन्न या कल्पवासी कहलाते हैं।

Comments : The heavens in which there are grades of Indra, Sāmānika etc. are called 'Kalpa' and where there is no such gradation, all those heavenly beings are called 'Kalpātīta'. All heavenly beings in nine Graiveyakas and above are Kalpātīta. All heavenly beings residing in Saudharma heaven onwards, upto Acyuta heaven are called 'Kalpopapanna' or 'Kalpavāsī'.

लौकान्तिक देवों के निवास स्थान
Abode of Laukāntika Devas

ब्रह्मलोकालया लौकान्तिकाः ।।२४।।

(ब्रह्मलोक-आलयाः लौकान्तिकाः।)

Brahmalokālayā Laukāntikāḥ. (24)

शब्दार्थ : **ब्रह्मलोकालयाः** - ब्रह्मलोक निवास स्थान (है); **लौकान्तिकाः** - लौकान्तिक (देवों का)।

Meaning of Words : **Brahmalokālayāḥ** - Brahmaloka is the abode; **Laukāntikāḥ** - of Laukāntikas (heavenly beings).

सूत्रार्थ : लौकान्तिक देवों का निवास स्थान ब्रह्म स्वर्ग में है।

English Rendering : Brahmaloka is the abode of Laukāntika (celestial beings).

टीका : ब्रह्मलोक में रहने वाले सभी देव लौकान्तिक नहीं होते। ब्रह्म स्वर्ग के अन्त में जिनके विमान हैं, वे देव लौकान्तिक हैं। चूँकि वे ब्रह्मलोक के अन्त में निवास करते हैं, इसलिए उन्हें लौकान्तिक कहते हैं। अथवा, जिन्होंने अपने लोक अर्थात् जन्म, जरा एवं मृत्यु से व्याप्त संसार का अन्त कर दिया है, वे लौकान्तिक कहलाते हैं। सभी लौकान्तिक देव एक बार गर्भ धारण कर मोक्ष प्राप्त करते हैं।

लौकान्तिक देवों का दूसरा नाम 'देव-ऋषि' है, क्योंकि वे विषय-रति से रहित होते हैं; देवाङ्गनाओं से रहित होते हैं और अन्य देव भी उनकी अर्चा करते हैं।

Comments : All the heavenly beings residing in Brahmaloka are not Laukāntikas. Only those Celestial Beings whose Vimānas stationed at the border of Brahmaloka are Laukāntikas. As these heavenly beings reside at the out-skirts of Brahmaloka, they are designated as 'Laukāntikas'. Or those who are at the end of their worldly transmigration i.e. birth, old-age and death are designated as 'Laukāntikas'. All Laukāntika heavenly beings attain salvation in their immediate next birth.

The second or another name of Laukāntika heavenly beings is 'Deva-Ṛṣi' i.e. heavenly erudite saints as they are free from passions and sex urge; do not keep company of female deities and they are venerated by other heavenly beings also.

लौकान्तिक देवों के भेद

Classification of Laukāntika Devas

सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाश्च ।।२५।।

(सारस्वत-आदित्य-वह्नि-अरुण-गर्दतोय-तुषित-अव्याबाध-अरिष्टाः च।)

Sārasvatādityavahnyaruṇagardatoyatuṣitāvyābādhāriṣṭāśca. (25)

शब्दार्थ : **सारस्वतादित्यवह्न्यरुणगर्दतोयतुषिताव्याबाधारिष्टाः च** – सारस्वत, आदित्य, वह्नि, अरुण, गर्दतोय, तुषित, अव्याबाध और अरिष्ट।

Meaning of Words : **Sārasvatādityavahnyaruṇagardatoya-tuṣitāvyābādhāriṣṭāḥ Ca** - Sārasvata, Āditya, Vahni, Aruṇa, Gardatoya, Tuṣita, Avyābādha and Ariṣṭa.

सूत्रार्थ : सारस्वत, आदित्य, वह्नि, अरुण, गर्दतोय, तुषित, अव्याबाध और अरिष्ट – ये लौकान्तिक देव हैं।

English Rendering : Laukāntika Devas are Sārasvata, Āditya, Vahni, Aruṇa, Gardatoya, Tuṣita, Avyābādha and Ariṣṭa.

टीका : इस सूत्र में लौकान्तिक देवों के आठ भेदों का कथन है। जो लौकान्तिक देव चौदह पूर्वों के ज्ञाता होते हैं, वे सारस्वत कहलाते हैं। वह्नि के समान जो दैदीप्यमान हों, वे वह्नि कहलाते हैं। उदीयमान सूर्य के समान जिनकी कान्ति हो, वे अरुण कहलाते हैं। शब्द को गर्द और जल को तोय कहते हैं। जिनके मुख से शब्द जल के प्रवाह की तरह निकलें, वे गर्दतोय हैं। जो सन्तुष्ट हों और विषय सुख से पराङ्मुख रहते हैं, वे तुषित हैं। जिनके कामादि जनित बाधा नहीं हैं, वे अव्याबाध हैं। जो अकल्याण करने वाला कार्य नहीं करते, उन्हें अरिष्ट कहते हैं। सूत्र में 'च' शब्द का उपयोग लौकान्तिक

देवों के अन्य भेदों को इंगित करने के लिये किया गया। आठ दिशाओं के बीच-बीच में दो-दो प्रकार के विमानों में स्थित देव रहते हैं। इस प्रकार लौकान्तिक देवों के 24 प्रकार बताये गये हैं।

लौकान्तिक देवों की विशेषताएँ :

1. ये देव तीर्थङ्करों की दीक्षा के समय उन्हें प्रतिबोधन अर्थात् वैराग्य भावों के अनुमोदनार्थ आते हैं। 'हरिवंशपुराण' (59/26) के अनुसार ये तीर्थङ्कर के विहार के समय उनके साथ विहार भी करते हैं।
2. ये स्वभाव से ही ब्रह्मचारी होते हैं।
3. इनके शरीर का रंग शङ्ख के समान सफेद होता है।
4. सब लौकान्तिक देव नियम से ग्यारह अङ्ग के धारी, सम्यग्दर्शन से शुद्ध और स्वभाव से तृप्त होते हैं (तिलोयपण्णत्ती-8/664), लेकिन सर्वार्थसिद्धि प्रभृति टीका ग्रन्थों के अनुसार ये चौदह पूर्व के ज्ञाता होते हैं।
5. इनके महिला आदिक रूप परिवार नहीं होते हैं, इसलिए ये निरन्तर संसार क्षय के कारणभूत वैराग्य की भावना भाते हैं।
6. ये एक भवावतारी अर्थात् एक मनुष्य भव धारण कर मोक्ष जाने वाले हैं।
7. 'देवर्षि' नाम वाले ये देव अन्य सब देवों से अर्चनीय, भक्ति में प्रसन्न और सर्व काल स्वाध्याय में स्वाधीन होते हैं।
8. इन देवों के शरीर का उत्सेध पाँच हाथ प्रमाण होता है।
9. ये देव शुक्ल लेश्या से शोभायमान होते हैं।
10. हीनाधिकता का अभाव होने से ये सभी स्वतन्त्र हैं अर्थात् कोई किसी के अधीन नहीं है।
11. ये देव बड़ी-बड़ी ऋद्धियों को धारण करने वाले होते हैं।
12. ये पूर्व भव में सम्पूर्ण श्रुत का अभ्यास करते हैं।

पञ्चम काल में भी जो मुनि रत्नत्रय की शुद्धता से युक्त होते हैं, वे आत्मा का ध्यान कर इन्द्र या लौकान्तिक देव होते हैं और वहाँ से चय कर मुनि बनकर निर्वाण को प्राप्त होते हैं (अष्टपाहुड/मोक्षपाहुड-77)।

Comments : In this Sūtra, description of eight divisions of Laukāntika heavenly beings is given. Those Laukāntikas who are well-versed in fourteen pūrvas are called 'Sārasvata'. Those who are luminous like Vahni are called 'Vahni'. Those whose luster is like the rising sun

are called 'Aruṇa'. The meaning of 'Garda' is 'Śabda' (i.e. words) and that of 'Toya' is water. Those whose words flow like stream of water are known as 'Gardatoya'. Those who feel complete satisfaction and remain indifferent towards sensuous pleasures are called 'Tuṣita'. Those who are above sex passions etc. are known as 'Avyābādha'. Those who do not indulge in inauspicious activities are called 'Ariṣṭa'. The word 'Ca' in the Sūtra indicates that there are other groups of Laukāntika Devas. Two classes each of these Laukāntika Devas reside in between gaps of each above mentioned eight directions in their Vimānas. As such Laukāntika Devas have twenty four classes.

Specialities of Laukāntika heavenly beings -

1. These heavenly beings come to support & appreciate the voliations of renunciation manifested in Tīrthaṅkaras at the time of their initiation as an ascetic. According to the description in 'Harivaṁśapurāṇa' (59/26), they also accompany with Tīrthaṅkaras at the time of their movement from one place to the other for preaching.
2. They are celibate by nature.
3. Their body-complexion is white like the colour of conch-shell.
4. All Laukāntikas are well-versed of eleven Aṅga scriptures, sanctified by right faith and of contended nature (according to 'Tiloyapaṇṇattī' 8/664), but according to the description in 'Sarvārthasiddhi' Prabhṛti commentary scripture, they are well versed in fourteen Pūrvas.
5. They do not have families comprising of female-deities etc. and they therefore remain engrossed in contemplation for renunciation to get rid of the transmigration.
6. They attain salvation just after taking immediate next birth.
7. They are called 'Devaṛṣi' and are venerated by other heavenly beings, remain engrossed in excellent reverences and study all the time religious scriptures.
8. Their body-height is five cubits.
9. They are endowed with pure white thought colouration.
10. Inferiority or superiority is non existant amongst them hence they all are independant i.e. not under any one else.

11. They are endowed with several great/enormous miraculus extra ordinary powers.

12. They study thoroughly all the religious scriptures in their previous life-courses. In this fifth era also, those asceties who are having extreme-purity in their 'Ratnatraya' (three jewels of Right Faith, Right Knowledge & Right Conduct), take their next birth either as Indra or a Laukāntika celestial being and after completing their life-span take immediate next birth and attain salvation after becoming an ascetic (Aṣṭapāhuḍa/Mokṣapāhuḍa-77).

सम्यग्दृष्टि देवों की विशेषता
Speciality of Right Believer Devas

विजयादिषु द्विचरमाः ।।२६।।

Vijayādiṣu Dvicaramāḥ. (26)

शब्दार्थ : **विजयादिषु** – विजय आदि (अनुत्तर विमानों) में; **द्विचरमाः** – दो चरम वाले (देव होते हैं)।

Meaning of Words : **Vijayādiṣu** - in Vijaya etc. (in Anuttara heavens); **Dvicaramāḥ** - two last births.

सूत्रार्थ : विजय आदि विमानों में देव द्विचरम शरीरी होते हैं।

English Rendering : Those heavenly beings who reside in Vijaya etc. (Anuttara Vimānas) are of two last births (as human beings).

टीका : विजय, वैजयन्त, जयन्त, अपराजित एवं नौ अनुदिश विमानों के देव भी द्विचरम शरीरी होते हैं। वे सभी सम्यग्दृष्टि और अहमिन्द्र होते हैं। यहाँ देह का चरमपना मनुष्य भव की अपेक्षा है। सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव एक मनुष्य जन्म धारण कर मोक्ष प्राप्त करते हैं।

अनुत्तर विमान पाँच हैं। उनमें से विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित - इन चारों विमानों में ही द्विचरम वाले देव हैं। वे अधिक से अधिक दो बार मनुष्य जन्म धारण कर मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं। इसका क्रम इस प्रकार है कि चार अनुत्तर विमानों या नौ

अनुदिश विमानों में से च्युत होकर मनुष्य जन्म, उसके बाद पुनः अनुत्तर आदि विमानों में देव जन्म, वहाँ से फिर मनुष्य जन्म और उसी जन्म से मोक्ष। परन्तु सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव च्युत होने के बाद केवल एक बार ही मनुष्य जन्म धारण कर उसी जन्म से मोक्ष प्राप्त करते हैं।

यहाँ यह भी जानना आवश्यक है कि अनुदिश और विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित विमानों से च्युत होने वाले देव एक मनुष्य भव धारण कर भी मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु अधिक से अधिक दो मनुष्य भव धारण कर तो वे मोक्ष प्राप्त कर ही लेते हैं, ऐसा नियम है।

Comments : The heavenly beings of Vijaya, Vaijayanta, Jayanta, Aparājita heavens and of Anudiśa heavens have only two last human-births before attaining salvation. They are all Right Believers and 'Ahamindras'. The last birth-course stated herein are with reference to the human births before attainment of salvation. The celestial beings of Sarvārthasiddhi take only one last human birth before attainment of salvation. The sequence of two last births is as follows - Heavenly beings in four Anuttara heavens and nine Anudiśa heavens take their two last births as human beings after completion of their life-span there. After completion of life time as a human, they take their next birth in Anuttara heavens etc., again after completing their life time as heavenly beings, they take their next birth as man and attain salvation in that very life-course. But those who come-out from Sarvārthasiddhi heaven take birth only once as a man and attain salvation in that very life-course.

It is also to be noted here that heavenly beings coming from Anudiśa heaven and those from Vijaya, Vaijayanta, Jayanta and Aparājita heavens can also attain salvation by taking only one birth as a man but the rule is that they would surely and certainly attain salvation after having maximum two final human births.

तिर्यञ्च गति के जीव

Souls in Tiryañca Life-course

औपपादिकमनुष्येभ्यः शेषास्तिर्यग्योनयः ।।२७।।

(औपपादिक-मनुष्येभ्यः शेषाः तिर्यक्-योनयः।)

Aupapādikamanuṣyebhyaḥ Śeṣāstiryagyonayaḥ. (27)

शब्दार्थ : **औपपादिकमनुष्येभ्यः** – उपपाद जन्मवाले और मनुष्यों से; **शेषास्तिर्यग्योनयः** – शेष (बचे जीव) तिर्यञ्च योनि (वाले हैं)।

Meaning of Words : **Aupapādikamanuṣyebhyaḥ** - (excepting) those with instanteneous birth (celestial & infernal beings) and human beings; **Śeṣāstiryagyonayaḥ** - remaining (souls) are Tiryañcas.

सूत्रार्थ : औपपादिक जन्म वालों (देव-नारकी) तथा मनुष्यों को छोड़कर शेष सभी संसारी जीव तिर्यञ्च हैं।

English Rendering : Except those born by instanteneous births (i.e. celestial and infernal beings) and human beings, all the remaining (mundane souls) are Tiryañcas.

टीका : इस सूत्र में तिर्यञ्च कौन हैं, इसका वर्णन है। औपपादिक जन्म वाले देव, नारकियों तथा मनुष्यों को छोड़कर अन्य सभी संसारी जीव तिर्यञ्च हैं। देव, नारकी और मनुष्य पाँच इन्द्रियों वाले होते हैं, लेकिन तिर्यञ्चों में एक इन्द्रिय से लेकर पाँच इन्द्रियों तक के जीव होते हैं। देव, नारकी और मनुष्य तो लोक के एक विशेष भाग में ही होते हैं, लेकिन तिर्यञ्च पूरे लोक में स्थित हैं।

Comments : This Sūtra describes those living beings who are termed as Tiryañcas. Except celestial beings & hellish beings - both of whom take instanteneons births and also human beings all other mundane beings are termed as Tiryañcas. Celestial beings, hellish beings & human beings possess all the five sense-organs but Tiryañcas are of one to five sense beings. Celestial beings, hellish beings & human beings are found only in some parts of Loka (universe) but Tiryañcas pervade the entire universe.

भवनवासी देवों की आयु
Life-Span of Residential Celestial Beings

स्थितिरसुरनागसुपर्णद्वीपशेषाणां सागरोपमत्रिपल्योपमार्द्धहीनमिता ।।२८।।
(स्थितिः असुर-नाग-सुपर्ण-द्वीप-शेषाणां सागरोपम-त्रिपल्योपम-अर्द्ध-हीनम् इता।)

Sthitirasuranāgasuparṇadvīpaśeṣāṇāṁ Sāgaropamatripalyopamārddhahīnamitā. (28)

शब्दार्थ : **स्थितिः** – आयु (क्रमशः); **असुर–नाग–सुपर्ण–द्वीप–शेषाणाम्** – असुरकुमार, नागकुमार, सुपर्णकुमार, द्वीपकुमार और शेषों (भवनवासी देवों) की; **सागरोपम–त्रिपल्योपमार्द्धहीनमिता** – सागरोपम, तीन पल्योपम और आधा–आधा पल्योपम कम अर्थात् ढाई पल्योपम, दो पल्योपम और डेढ़ पल्योपम (प्रमाण होती है)।

Meaning of Words : **Sthitiḥ** - life-span (gradually); **Asura-nāga-suparṇa-dvīpa-śeṣāṇām** - of Asurakumāra, Nāgakumāra, Suparṇakumāra, Dvīpakumāra and remaining residential celestial beings; **Sāgaropama-tripalyopamārddhahīnamitā** - Sāgaropama, three Palyopamas and less-less by half Palyopama i.e. two and half Palyopamas, two Palyopamas and one & half Palyopamas.

सूत्रार्थ : असुरकुमार, नागकुमार, सुपर्णकुमार, द्वीपकुमार और शेष भवनवासी देवों की उत्कृष्ट स्थिति क्रमशः एक सागरोपम, तीन पल्योपम, ढाई पल्योपम, दो पल्योपम और डेढ़ पल्योपम प्रमाण है।

English Rendering : The maximum life-span of Asurakumāra, Nāgakumāra, Suparṇakumāra, Dvīpakumāra and remaining residential celestial beings is one Sāgaropama, three Palyopamas, two & half Palyopamas, two Palyopamas and one & half Palyopamas respectively.

टीका : सूत्र दस में भवनवासी देवों के दस प्रकारों का कथन है। इस सूत्र में उनकी उत्कृष्ट आयु का कथन है। असुरकुमार देवों की आयु एक सागरोपम, नागकुमार देवों की तीन पल्योपम, सुपर्णकुमार देवों की ढाई पल्योपम, द्वीपकुमार देवों की दो पल्योपम है। शेष छह प्रकार के देवों - विद्युत्कुमार, अग्निकुमार, वातकुमार, स्तनितकुमार, उदधिकुमार और दिक्कुमार देवों की उत्कृष्ट आयु डेढ़ पल्योपम है।

Comments : Sūtra ten mentions ten grades of residential celestial beings. Here their maximum life-span is being described. The life-span

of Asurakumāra celestial beings is one Sāgaropama, of Nāgakumāras three Palyopamas, of Suparṇakumāras two & half Palyopamas, and of Dvīpakumāras of two Palyopamas. The maximum life-span of remaining six grades of residential celestial beings i.e. Vidyutkumāra, Agnikumāra, Vātakumāra, Stanitakumāra, Udadhikumāra and Dikkumāra is one & half Palyopamas.

सौधर्म-ऐशान स्वर्ग में देवों की आयु
Life-Span of Celestial Beings of Saudharma-Aiśāna Heavens

सौधर्मैशानयोः सागरोपमे अधिके ।।२९।।

(सौधर्म-ऐशानयोः सागरोपमे अधिके।)

Saudharmaiśānayoḥ Sāgaropame Adhike. (29)

शब्दार्थ : **सौधर्मैशानयोः** - सौधर्म और ऐशान स्वर्गों में (देवों की आयु); **सागरोपमे अधिके** - दो सागरोपम साधिक - कुछ अधिक सहित है।

Meaning of Words : **Saudharmaiśānayoḥ** - (life-span) of heavenly beings of Saudharma and Aiśāna heavens; **Sāgaropame Adhike** - two Sāgaropama & somewhat more.

सूत्रार्थ : सौधर्म और ऐशान स्वर्गों में देवों की उत्कृष्ट आयु दो सागरोपम साधिक - कुछ अधिक सहित है।

English Rendering : The life-span of the heavenly beings of Saudharma and Aiśāna heavens is two Sāgaropamas & somewhat more.

टीका : जिन जीवों ने पहले ऊपर के स्वर्गों की आयु बाँधी थी, बाद में संक्लेश परिणामों के कारण आयु में ह्रास करके जो नीचे के स्वर्ग में उत्पन्न होते हैं, वे घातायुष्क कहलाते हैं। दो सागरोपम से अधिक आयु का कथन घातायुष्क जीवों की अपेक्षा है। सामान्यतः सौधर्म और ऐशान स्वर्ग में देवों की उत्कृष्ट आयु कुछ अधिक दो सागरोपम होती है।

Comments : The worldly beings who bind their next birth for higher heavens but later on due to their painful thoughts, the place of their birth from higher heavens get degraded and they take their births in lower category or class of heavens, are known as 'Ghātāyuṣka'. The description of two Sāgaropama & more is with reference to Ghātāyuṣka beings. Normally the life-span of celestial beings in Saudharma and Aiśāna heavens is somewhat more than two Sāgaropamas.

सानत्कुमार–माहेन्द्र स्वर्ग में देवों की आयु
Life-Span in Sānatkumāra & Māhendra Heavens

सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः सप्त ।।३०।।

Sānatkumāramāhendrayoḥ Sapta. (30)

शब्दार्थ : **सानत्कुमारमाहेन्द्रयोः** – सानत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्गों में (देवों की आयु); **सप्त** – सात (सागरोपम है)।

Meaning of Words : **Sānatkumāramāhendrayoḥ** - life-span of heavenly beings of Sānatkumāra and Māhendra heavens; **Sapta** - seven (Sāgaropama)

सूत्रार्थ : सानत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्गों में देवों की उत्कृष्ट आयु साधिक सात सागरोपम प्रमाण है।

English Rendering : The maximum life-span of the heavenly beings of Sānatkumāra and Māhendra heavens is little over seven Sāgaropamas.

टीका : सानत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्गों में देवों की उत्कृष्ट आयु साधिक सात सागरोपम प्रमाण है।

Comments : The maximum life-span of the heavenly beings of Sānatkumāra & Māhendra heavens is little over seven Sāgaropamas.

शेष कल्पों में उत्कृष्ट स्थिति
Maximum Life-Span of Remaining Kalpas

त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपञ्चदशभिरधिकानि तु ।।३१।।

(त्रि-सप्त-नव-एकादश-त्रयोदश-पञ्चदशभिः अधिकानि तु।)

Trisaptanavaikādaśatrayodaśapañcadaśabhiradhikāni Tu. (31)

शब्दार्थ : **त्रिसप्तनवैकादशत्रयोदशपञ्चदशभिः** - तीन, सात, नौ, ग्यारह, तेरह तथा पन्द्रह (सागरोपम); **अधिकानि तु** - साधिक है।

Meaning of Words : **Trisaptanavaikādaśatrayodaśapañcadaśabhiḥ** - three, seven, nine, eleven, thirteen and fifteen (Sāgaropamas); **Adhikāni Tu** - somewhat more.

सूत्रार्थ : शेष छह स्वर्ग-युगलों में रहने वाले वैमानिक देवों की उत्कृष्ट आयु सानत्कुमार-माहेन्द्रस्वर्गों में उत्कृष्ट स्थिति साधिक सात सागरोपम है, उस सात सागरोपम से अधिक तीन, सात, नव, ग्यारह, तेरह और पन्द्रह सागरोपम अधिक है।

English Rendering : The maximum life-spans of the remaining six couple-groups of heavenly beings is three, seven, nine, eleven, thirteen and fifteen Sāgaropamas adding to it somewhat more than seven Sāgaropamas of Sānatkumāra & Māhendra heavenly beings.

टीका : सानत्कुमार-माहेन्द्र स्वर्गों में देवों की उत्कृष्ट स्थिति पिछले सूत्र के अनुसार साधिक सात सागरोपम बताई है। ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर स्वर्गों में देवों की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम सहित साधिक तीन सागरोपम यानी साधिक दस सागरोपम है। लान्तव-कापिष्ठ स्वर्गों में देवों की सात सागरोपम सहित साधिक सात सागरोपम यानी साधिक चौदह सागरोपम; शुक्र-महाशुक्र स्वर्गों में देवों की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम सहित साधिक नौ सागरोपम यानी साधिक सोलह सागरोपम; शतार-सहस्रार स्वर्गों में देवों की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम सहित साधिक ग्यारह सागरोपम यानी साधिक अठारह सागरोपम, आनत-प्राणत स्वर्गों में देवों की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम सहित तेरह सागरोपम यानी बीस सागरोपम और आरण-अच्युत स्वर्गों में देवों की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपम सहित पन्द्रह सागरोपम यानी बाईस सागरोपम है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि 'साधिक आयु' सूत्र 29 की टीकानुसार घातायुष्क जीवों की अपेक्षा से है। घातायुष्क जीवों की उत्पत्ति केवल बारहवें स्वर्ग तक ही होती है। इसलिए साधिक आयु का प्रकरण उसी स्वर्ग की उत्कृष्ट आयु तक किया गया है।

सूत्र में 'तु' शब्द विशेषता दिखलाने के लिए है। इससे यह विशेषता मालूम पड़ती है कि अधिक शब्द की अनुवृत्ति होकर उसका सम्बन्ध 'त्रि' आदि चार शब्दों से ही होता है, अन्त के दो स्थिति विकल्पों से नहीं। अर्थात् साधिक आयु का कथन केवल सहस्रार स्वर्ग तक के देवों की उत्कृष्ट स्थिति से है, उससे आगे के स्वर्गों के देवों के लिए नहीं।

Comments : As stated under the comments of the previous Sūtra, the maximum life-time of those in Sānatkumāra & Māhendra heavens is a little more more than seven Sāgaropamas. By adding three to little more than seven Sāgaropamas i.e. somewhat more than ten Sāgaropamas, the maximum life-span of those in Brahma & Brahmottara heavens is somewhat more than ten Sāgaropamas. Adding seven to somewhat more than seven Sāgaropamas i.e. somewhat more than fourteen Sāgaropamas is the maximum life-span of those in Lāntava & Kāpiṣṭha heavens; adding nine to somewhat more than seven Sāgaropamas i.e. somewhat more than sixteen Sāgaropamas is the maximum life-span of those in Śukra & Mahāśukra heavens. Adding eleven to somewhat more than seven Sāgaropamas i.e. somewhat more than eighteen Sāgaropamas is the maximum life-span of those in Śatāra & Sahasrāra heavens. Adding thirteen to seven Sāgaropamas, i.e. twenty Sāgaropamas is the maximum life-span of those in Ānata & Prāṇata heavens and adding fifteen to seven Sāgaropamas i.e. twenty-two Sāgaropamas is the maximum life-time of those in Āraṇa & Acyuta heavens.

It is to be mentioned here that phrase 'somewhat more' or 'a little more' is in the context of those living beings who are 'Ghātāyuṣka' as explained under comments of Sūtra 29. As 'Ghātāyuṣkas' are born

only up to twelfth heaven and therefore addition of the phrase is only upto the life-span applicable to that heaven.

The use of word 'Tu' in the Sūtra is to indicate a particular context. It is to indicate that 'Sādhika' i.e. a little over is to be added only up to four grades of heavenly beings and not to the last two grades. That is, 'a little over' addition in maximum life-span is only-up to Śahasrāra heaven and not beyond that.

कल्पातीत स्वर्गों में देवों की आयु
Life-Span of Kalpātīta Heavenly Beings

आरणाच्युतादूर्ध्वमेकैकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजयादिषु सर्वार्थसिद्धौ च ।।३२।।

(आरण-अच्युतात् ऊर्ध्वम् एक-एकेन नवसु ग्रैवेयकेषु विजय-आदिषु सर्वार्थसिद्धौ च।)

Āraṇācyutādūrdhvamekaikena Navasu Graiveyakeṣu Vijayādiṣu Sarvārthasiddhau Ca. (32)

शब्दार्थ : **आरणाच्युतात् –** आरण-अच्युत स्वर्गों से; **ऊर्ध्वम्** – ऊपर; **एकैकेन** – एक-एक से (सागरोपम की वृद्धि); **नवसु ग्रैवेयकेषु** – नव ग्रैवेयकों (एवं नव अनुदिशों) में; **विजयादिषु** – विजय आदि (विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजितों विमानों) में; **सर्वार्थसिद्धौ च** – और सर्वार्थसिद्धि में।

Meaning of Words : **Āraṇācyutāt -** from Āraṇa - Acyuta heavens; **Ūrdhvam** – above; **Ekaikena** - one-one (Sāgaropama increase); **Navaṣu Graiveyakeṣu** - in nine Graiveyakas (and in nine Anudiśas); **Vijayādiṣu** - in Vijaya, Vaijayanta, Jayanta and Aparājita heavens; **Sarvārthasiddhau Ca** - and in Sarvārthasiddhi.

सूत्रार्थ : आरण-अच्युत स्वर्गों से ऊपर नव ग्रैवेयकों में से प्रत्येक में, नव अनुदिशों और विजय आदि (चार) विमानों में एक-एक सागरोपम की वृद्धि होती है एवं सर्वार्थसिद्धि में देवों की स्थिति तैंतीस सागरोपम है।

English Rendering : In each of the nine Graiveyakas, nine Anudiśas, (four) heavens of Vijaya etc. the life-span goes on increasing by one Sāgaropama from that of Āraṇā-Acyuta heavens. The life-span of the heavenly beings of Sarvārthasiddhi heaven is thirty-three Sāgaropamas.

टीका : आरण-अच्युत स्वर्गों में देवों की उत्कृष्ट स्थिति 22 सागरोपम प्रमाण सूत्र 31 की टीका में बताई गई है। नव ग्रैवेयकों में प्रत्येक ग्रैवेयक में एक-एक सागरोपम की वृद्धि होती है। अतः प्रथम ग्रैवेयक में 23 सागरोपम और अन्तिम ग्रैवेयक में 31 सागरोपम उत्कृष्ट स्थिति प्रमाण है। सभी अनुदिश विमानों में 32 सागरोपम और अनुत्तर विमानों में सर्वार्थसिद्धि सहित 33 सागरोपम प्रमाण देवों की उत्कृष्ट स्थिति है। अर्थात् नव ग्रैवेयकों में देवों की उत्कृष्ट स्थिति प्रत्येक ग्रैवेयक में एक-एक सागरोपम बढ़ती जाती है, जबकि सभी अनुदिशों के देवों में केवल एक सागरोपम की ही वृद्धि होती है। और सर्वार्थसिद्धि के देवों की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति 33 सागरोपम की होती है, इसलिए सूत्र में सर्वार्थसिद्धि का अलग से उल्लेख है।

Comments : Under the comments of Sūtra 31, it is stated that the maximum life-span of those in Āraṇā & Acyuta heavens is twenty-two Sāgaropamas. Those in nine Graiveyakas, this life-span increases by one Sāgaropama for each Graiveyaka. As such the life-span in first Graiveyaka is twenty-three Sāgaropama and in the last, it is maximum thirty-one Sāgaropamas. By adding one to those who are in Anudiśa heavens, it is uniformly thirty two Sāgaropamas and by adding one to all Anuttara heavens including Sārvārthasiddhi, it is maximum thirty-three Sāgaropamas. It means that in every Graiveyaka, the maximum life-span increases by one Sāgaropama and increase for all nine Anudiśa heavens taken together is one Sāgaropama. The maximum & minimum life-span of those in Sarvārthasiddhi heaven is fixed as thirty-three Sāgaropamas and it is because of this reason, there is a separate mention of Sarvārthasiddhi heaven in the Sūtra.

सौधर्म-ऐशान स्वर्गों में जघन्य आयु
Minimum Life-Span in Saudharma-Aiśāna Heavens

अपरा पल्योपममधिकम् ।।३३।।

(अपरा पल्योपमम् अधिकम्।)

Aparā Palyopamamadhikam. (33)

शब्दार्थ : **अपरा** – जघन्य (स्थिति); **पल्योपममधिकम्** – पल्योपम से कुछ अधिक (है)।

Meaning of Words : **Aparā** - minimum (life-span); **Palyopamamadhikam** - somewhat more than one Palyopama.

सूत्रार्थ : सौधर्म-ऐशान स्वर्ग के देवों की जघन्य स्थिति एक पल्योपम से कुछ अधिक है।

English Rendering : The minimum life-span of heavenly beings of Saudharma and Aiśāna heavens is somewhat more than one Palyopama.

टीका : इस सूत्र में विमानवासी देवों की जघन्य स्थिति का वर्णन है। सौधर्म-ऐशान स्वर्ग के देवों की जघन्य स्थिति एक पल्योपम से कुछ अधिक है, ऐसा अगले सूत्र से भी फलित होता है।

Comments : In this Sūtra, description of the minium life-span of heavenly beings is given. The minimum life-span of those in Saudharma & Aiśāna heavens is little over one Palyopama. This is also inferred from the next Sūtra.

शेष देवों की जघन्य आयु
Minimum Life-Span of Remaining Heavenly Beings

परतः परतः पूर्वा पूर्वाऽनन्तरा ।।३४।।

(परतः परतः पूर्वा पूर्वा-अनन्तरा।)

Parataḥ Parataḥ Pūrva Purvā(a)nantarā. (34)

शब्दार्थ : **परतः परतः** – आगे-आगे (के लिए); **पूर्वा पूर्वा** – पहले-पहले (की उत्कृष्ट स्थिति); **अनन्तरा** – बिना अन्तरवाली (जघन्य स्थिति होती है)।

Meaning of Words : **Parataḥ Parataḥ** - higher & higher; **Pūrvā Pūrvā** - immediately preceding ones (maxium life-span); **Anantarā** - minimum life-span.

सूत्रार्थ : पहले-पहले के देवों की उत्कृष्ट स्थिति आगे-आगे के देवों की बिना अन्तर के जघन्य स्थिति होती है।

English Rendering : The maximum life span of the immediately preceding group is the minimum of the next group of heavenly beings.

टीका : सौधर्म-ऐशान स्वर्गों के देवों की उत्कृष्ट स्थिति सूत्र 29 के अनुसार दो सागरोपम से कुछ अधिक है। अतः सानत्कुमार-माहेन्द्र स्वर्गों के देवों की जघन्य आयु साधिक दो सागरोपम से एक समय अधिक है। इसी प्रकार सानत्कुमार-माहेन्द्र स्वर्गों के देवों की उत्कृष्ट आयु सूत्र 30 की टीकानुसार साधिक सात सागरोपम है । अतः ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर स्वर्गों के देवों की जघन्य आयु साधिक सात सागरोपम से एक समय अधिक है। इसी प्रकार एक समय अधिक होकर आगे भी पहले-पहले के स्वर्गों की उत्कृष्ट आयु आगे-आगे की जघन्य आयु हो जाती है। इसी प्रकार की व्यवस्था तैंतीस सागरोपम की उत्कृष्ट आयु होने पर्यन्त समझना चाहिए। सर्वार्थसिद्धि स्वर्ग के देवों की जघन्य और उत्कृष्ट आयु तैंतीस सागरोपम प्रमाण है।

Comments : According to the Sūtra 29, the maximum life-span of celestial beings in Saudharma & Aiśāna heavens is little over two Sāgaropamas. As such the minimum life-span of those in Sānatkumāra & Māhendra heavens is little over two Sāgaropamas. Similarly, according to comments of Sūtra thirty (30), the maximum life-span of those in Sānatkumāra & Māhendra heavens is little over seven Sāgaropamas and as such the minimum life-span of those in Brahma & Brahamottara

heavens is little over seven Sāgaropamas. In the same manner, the maximum life-span of those in preceding heavens becomes minimum life-span for those in succeeding heavens with an addition of one 'Samaya'. It is to be noted that this rule is up to the stage where maximum life-time is thirty-three (33) Sāgaropamas. But in Sarvārthasiddhi heaven, the maximum & minimum life-span is fixed as thirty-three (33) Sāgaropamas.

नारकियों की जघन्य स्थिति
Minimum Life-Span of Hellish Beings

नारकाणां च द्वितीयादिषु ।।३५।।

(नारकाणां च द्वितीय-आदिषु।)

Nārakāṇaṁ Ca Dvitīyādiṣu. (35)

शब्दार्थ : **नारकाणां च** – नारकियों की (जघन्य स्थिति) भी; **द्वितीयादिषु** – द्वितीय आदि (पृथिवियों) में।

Meaning of Words : **Nārakāṇaṁ Ca** - also the (minimum) life-span of hellish beings; **Dvitīyādiṣu** - second earth etc.

सूत्रार्थ : द्वितीय आदि पृथिवियों में नारकियों की जघन्य स्थिति पूर्व-पूर्व पृथिवियों के नारकियों की उत्कृष्ट स्थिति के समान है।

English Rendering : The minimum life-span of the hellish beings from the second etc. onwards earths is equal to the maximum life-span in the earth just above it.

टीका : नारकियों की उत्कृष्ट स्थिति का वर्णन तीसरे अध्याय में किया गया है, परन्तु वहाँ उनकी जघन्य स्थिति का कथन नहीं हुआ है। यहाँ देवों के समान ही यह कहा गया है कि नीचे-नीचे की पृथिवियों में उनके ऊपर की पृथिवियों के नारकियों की उत्कृष्ट स्थिति के प्रमाण जघन्य स्थिति होगी। पहली पृथिवी के नारकियों की उत्कृष्ट

स्थिति एक सागरोपम है। अतः दूसरी पृथिवी के नारकियों की जघन्य स्थिति एक सागरोपम होगी। इसी प्रकार दूसरी पृथिवी के नारकियों की उत्कृष्ट स्थिति तीन सागरोपम है। अतः तीसरी पृथिवी के नारकियों की जघन्य स्थिति भी तीन सागरोपम है। इसी प्रकार अन्य पृथिवियों के नारकियों के जघन्य स्थिति की गणना की जाती है। सातवीं पृथिवी के नारकियों की जघन्य आयु बाईस सागरोपम प्रमाण है।

Comments : The maximum life-span of hellish beings has been described in chapter three but there is no mention of their minimum life-span. It is said here that like the celestial beings, the minimum life-span of those in succeeding lower earths is equal to the maximum life-span of those in preceding earths. The maximum life-span of those in first earth is one Sāgaropama and as such the minimum life-span of those in second earth is one Sāgaropam and the maximum life-span in the second earth is three Sāgaropmas as such the minimum life-span of those in third earth is three Sāgaropamas. Similarly the minimum life-span of those in remaining earths is computed. The minimum life-span of those in seventh earth is twenty-two Sāgaropamas.

प्रथम पृथिवी में जघन्य आयु
Minimum Life-Span in First Earth

दशवर्षसहस्राणि प्रथमायाम् ।।३६।।

Daśavarṣasahasrāṇi Prathamāyām. (36)

शब्दार्थ : **दशवर्षसहस्राणि** – दस हजार वर्ष (प्रमाण); **प्रथमायाम्** – प्रथम (पृथिवी) में।

Meaning of Words : **Daśavarṣasahasrāṇi** - life-span of ten thousand years; **Prathamāyām** - of those in first earth (minimum life-span of hellish beings).

सूत्रार्थ : प्रथम पृथिवी के नारकियों की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष प्रमाण है।

English Rendering : The minimum life-span of the hellish beings of the first earth is ten thousand years.

टीका : इस सूत्र का सम्बन्ध पूर्व सूत्र तैंतीस में उल्लेखित जघन्य स्थिति से है। इस सूत्र में प्रथम रत्नप्रभा पृथिवी में स्थित नारकियों की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष कही गई है।

Comments : This Sūtra has a reference with the earlier Sūtra 33 wherein minimum life-span is detailed. In this Sūtra, the minimum life-span of the hellish beings who are born in first earth 'Ratnaprabhā' is stated as ten thousand years.

भवनवासी देवों की जघन्य आयु
Minimum Life-Span of Residential Devas

भवनेषु च ।।३७।।

Bhavaneṣu Ca. (37)

शब्दार्थ : **भवनेषु** – भवनों में (भवनवासी देवों की); **च** – उतनी (ही है)।

Meaning of Words : **Bhavaneṣu** - in residences (i.e. of residential celestial beings); **Ca** - same (as previous one).

सूत्रार्थ : भवनों में रहने वाले भवनवासियों की जघन्य स्थिति भी दस हजार वर्ष प्रमाण है।

English Rendering : The minimum life-span of the residential celestial beings is also ten thousand years.

टीका : चूँकि सूत्र 36 में जघन्य स्थिति का वर्णन है, इसलिए इस सूत्र में भी भवनों में रहने वाले भवनवासी देवों की जघन्य स्थिति का वर्णन है। इसमें भवनवासियों की जघन्य स्थिति प्रथम पृथिवी के नारकियों के समान ही दस हजार वर्ष बताई है।

Comments : In the previous Sūtra 36, there is the description of minimum life-span, as such, this Sūtra also deals with the same. Here minimum life-span of residential celestial beings is stated as ten thousand years as is in the case of hellish beings born in first earth.

व्यन्तर देवों की जघन्य आयु
Minimum Life-Span of Peripatetics

व्यन्तराणां च ।।३८।।

Vyantarāṇāṁ Ca. (38)

शब्दार्थ : **व्यन्तराणाम्** – व्यन्तरों (देवों) की; **च** – और (जघन्य स्थिति उतनी ही)।

Meaning of Words : **Vyantarāṇā**m- of peripatetic celestial beings; **Ca -** and Same as earlier i.e. the minimum life-span).

सूत्रार्थ : व्यन्तर देवों की जघन्य स्थिति भी दस हजार वर्ष है।

English Rendering : The minimum life-span of peripatetic celestial beings is also ten thousand years.

टीका : सूत्र में 'च' शब्द से इस सूत्र में पूर्व सूत्रों से अनुवृत्ति हो जाती है। पूर्व सूत्रों में जघन्य स्थिति का कथन है, इसलिए इस सूत्र के द्वारा व्यन्तरों की जघन्य स्थिति प्रथम पृथिवी के नारकियों और भवनवासी देवों के समान दस हजार वर्ष है ।

Comments : The word 'Ca' in this Sūtra is for connecting the subject matter with the previous Sūtras wherein the description of minimum life-span is given. In those Sūtras, description of the minimum life-span of peripatetic celestical beings is given as ten thousand years similar to that of the hellish beings born in first earth and of residential celestial beings.

व्यन्तर देवों की उत्कृष्ट आयु
Maximum Life-Span of Peripatetics

परा पल्योपममधिकम् ।।३९।।

(परा पल्योपमम् अधिकम्।)

Parā Palyopamamadhikam. (39)

शब्दार्थ : **परा** – उत्कृष्ट (स्थिति व्यन्तरों की); **पल्योपमम् अधिकम्** – एक पल्य से कुछ अधिक।

Meaning of Words : **Parā** - maximum life-span (of peripatetics); **Palyopamam-Adhikam** - somewhat more than one Palyopama.

सूत्रार्थ : व्यन्तरों की उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपम से कुछ अधिक है।

English Rendering : The maximum life-span of peripatetics is somewhat more than one Palyopama.

टीका : पूर्व सूत्र में व्यन्तर देवों की जघन्य स्थिति का कथन है। इस सूत्र में उनकी उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपम से कुछ अधिक होने का कथन है।

Comments : The previous Sūtra gives details of the minimum life-span of the peripatetics. This Sūtra gives details of their maximum life-span which is given as a little over one Palyopama.

ज्योतिष्क देवों की उत्कृष्ट आयु
Maximum Life-Span of Stellars

ज्योतिष्काणां च ।।४०।।

(ज्योतिष्काणाम् च।)

Jyotiṣkāṇāṁ Ca. (40)

शब्दार्थ : **ज्योतिष्काणाम्** – ज्योतिष्कों (देवों) की; **च** – तथा (उत्कृष्ट स्थिति भी वही है)।

Meaning of Words : **Jyotiṣkāṇām**- of stellars (celestial beings); **Ca** - and (maximum life-span is also same i.e. as that of peripatetics).

सूत्रार्थ : ज्योतिष्क देवों की उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपम से कुछ अधिक है।

English Rendering : The maximum life-span of stellar celestial beings is a little over than one Palyopama.

टीका : इस सूत्र में 'च' शब्द के प्रयोग से पूर्व सूत्र 39 के साथ अनुवृत्ति होने से ज्योतिष्क देवों की उत्कृष्ट स्थिति भी व्यन्तरों के समान एक पल्योपम से कुछ अधिक होने का कथन है।

Comments : The use of the word 'Ca' in the Sūtra indicates the continuity of the subject of the previous Sūtra 39. Here the maximum life-span of stellar celestial beings is stated as a little over one Palyopama similar to that of peripatetics.

ज्योतिष्क देवों की जघन्य आयु
Minimum Life-Span of Stellars

तदष्टभागोऽपरा ।।४१।।

(तत्-अष्टभागः अपरा।)

Tadaṣṭabhāgo(a)parā. (41)

शब्दार्थ : **तदष्टभाग**: – उसके (उत्कृष्ट स्थिति के) आठवें भाग (प्रमाण); **अपरा** – जघन्य (स्थिति)।

Meaning of Words : **Tadaṣṭabhāgaḥ** - of that (maximum life-span) eighth part**; Aparā** - minimum life-span.

सूत्रार्थ : ज्योतिष्क देवों की जघन्य स्थिति साधिक पल्योपम के आठवें भाग प्रमाण है।

English Rendering : The minimum life-span of the stellar celestial beings is one-eighth part of one Palyopama.

टीका : पूर्व सूत्र 40 में ज्योतिष्क देवों की उत्कृष्ट स्थिति साधिक एक पल्योपम का कथन है। अतः उस सूत्र की अनुवृत्ति होने से यहाँ इस सूत्र द्वारा स्पष्ट किया गया है कि उनकी जघन्य स्थिति उत्कृष्ट स्थिति के आठवें भाग प्रमाण होती है। 'सर्वार्थसिद्धि' ग्रन्थ की टीका में ज्योतिष्क देवों की जघन्य स्थिति पल्योपम के आठवें भाग का उल्लेख है। 'तिलोयपण्णत्ती' (7/619-620) में भी इसी प्रकार का कथन है।

Comments : In the previous Sūtra 40, the maximum life-time of stellar celestial beings is given as a little over one Palyopama. The subject matter of this Sūtra is also related to that, it is clarified here that the minimum life-time of stellars is one-eighth part of their maximum life-time. In the commentary given in 'Sarvārthasiddhi' scripture, it is stated to be one-eighth part of one Palyopama. The same is also given in 'Tiloyapaṇṇattī' (7/619-620) scripture.

लौकान्तिक देवों की आयु
Life-Span of Laukāntika Devas

लौकान्तिकानामष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ।।४२।।

(लौकान्तिकानाम्-अष्टौ सागरोपमाणि सर्वेषाम् ।)

Laukāntikānāmaṣṭau Sāgaropamāṇi Sarveṣām. (42)

शब्दार्थ : **लौकान्तिकानाम्** – लौकान्तिकों की (देवों की स्थिति); **अष्टौ सागरोपमाणि** – आठ सागरोपम (प्रमाण); **सर्वेषाम्** – सभी की।

Meaning of Words : **Laukāntikānām** - of Laukāntika heavenly beings (life-span); **Aṣṭau Sāgaropamāṇi** - eight Sāgaropamas **Sarveṣām** - of all.

सूत्रार्थ : सभी लौकान्तिक देवों की स्थिति आठ सागरोपम प्रमाण है।

English Rendering : The life-span of all Laukāntika heavenly beings is eight Sāgaropamas.

टीका : सभी लौकान्तिक देवों की जघन्य और उत्कृष्ट स्थिति आठ सागरोपम प्रमाण है। उन सब देवों की शुक्ल लेश्या होती है और उनके शरीर की ऊँचाई पाँच हाथ होती है।

Comments : The minimum & maximum life-time of all Laukāntika heavenly beings is eight Sāgaropamas. They all are bestowed with pure white thought - colouration and their body height is five cubits.

इति तत्त्वार्थसूत्रे चतुर्थोऽध्यायः।

End of Fourth Chapter of Tattvārthasūtra.

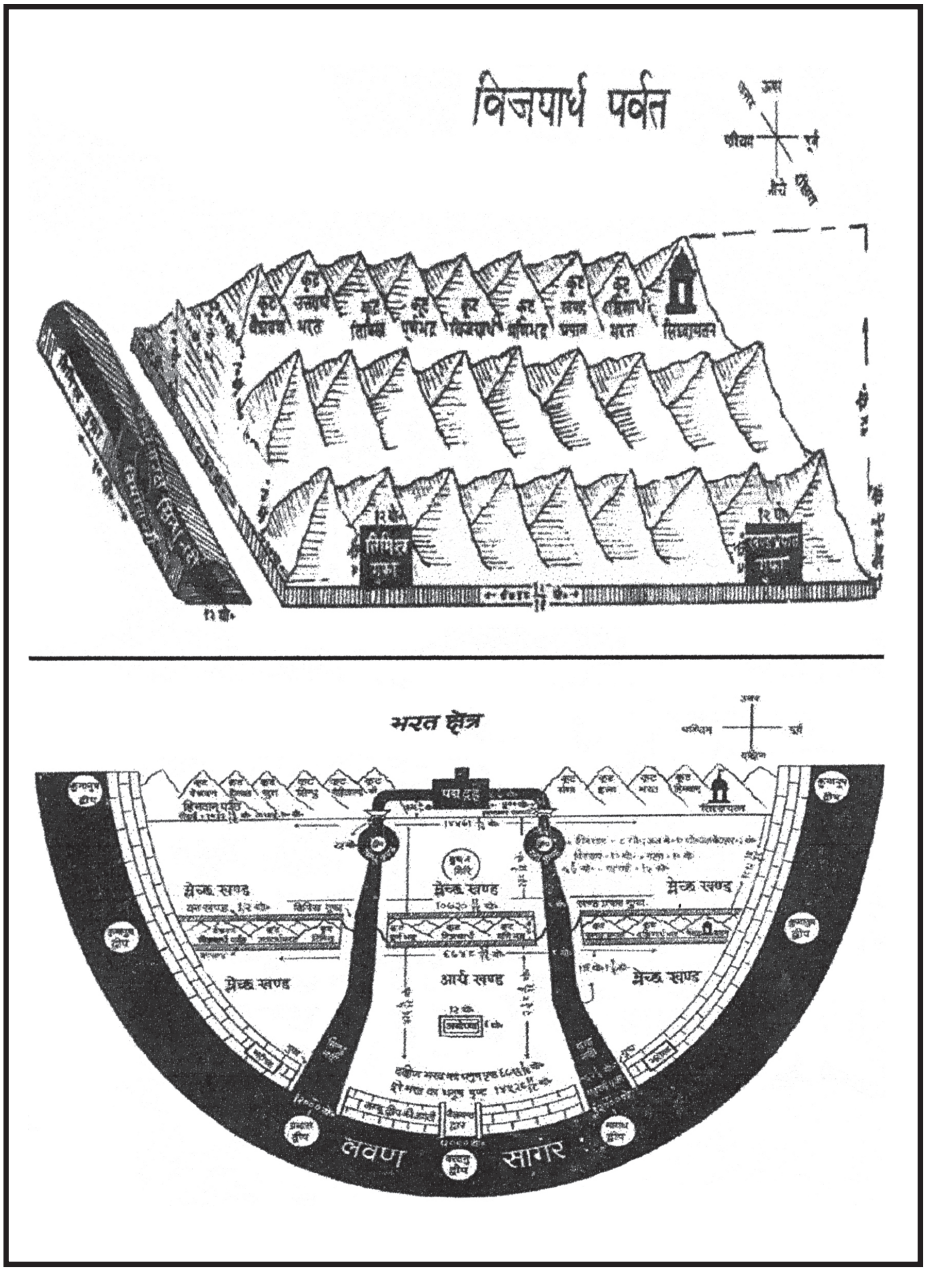

विजयार्ध पर्वत

भरत क्षेत्र
म्लेच्छ खण्ड
म्लेच्छ खण्ड
म्लेच्छ खण्ड
म्लेच्छ खण्ड
म्लेच्छ खण्ड
आर्य खण्ड
लवण सागर